Internal Security

Global / राष्ट्रीय / आंत.

Nationalism → Extreme Nationalism

Inte

आंतरिक सुरक्षा → is a process
→ imp. → विकास → world power

I) अर्थ / तात्पर्य
II) दृश्यगत तत्व
भारत के संदर्भ में महत्व

किसी भी C. की

① भौगोलिक सीमा के अंतर्गत शांति एवं सुव्यवस्था की स्थिति / वातावरण का निर्माण ⟹ for व्यक्ति की सम्पूर्ण बौद्धिक / तार्किक / शारीरिक क्षमता का उपयोग हो सके

⇓

व्यक्ति के विकास एवं राष्ट्र के विकास का आधार

② दूसरा देश आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं → Instrum… / वैचारिक
आंतरिक विरोधाभास को उभार ना सके

II) दृश्यगत तत्व :- आ० सु० की प्रक्रिया के अंतर्गत सुरक्षित क्षेत्र, शांति एवं व्यवस्था की उपस्थिति, जन-स्वतंत्रता, (?) विधि का शासन, समानता के साथ विकास, दृश्यगत समानता, विविधता में एकता आदि को तत्वों में शामिल किया जा सकता है। ये सभी तत्व राष्ट्र निर्माण के तत्व हैं। ∴ I.S. एक ऐसी प्रक्रिया है, जो रा० नि० को भी सुनिश्चित करती है)

अतः राज्य के मध्य निरन्तर है,
↓
लोगों के शक्ति
↓
सौहार्द

चेतना | मैमेलिया | डेमोक्रेसी   भारत

1947 → लोकतंत्र को अपनाया

अधिकार &
कर्तव्य

भारत के संदर्भ में Imp. है —

- भारत की विविधता युक्त संस्कृति जिसमें एकता को बनाये रखने के लिए सांस्कृतिक मूल्यों के स्तर पर टकराव को रोकना आवश्यक है। ~~भारत की भौगो. स्थिति~~

(+)
खाद्य
औद्योगिक
- natural resource
Energy resource

- भारत की भौगोलिक स्थिति — भू-सामरिक (मुख्य कि) महत्व को सुनिश्चित करने के लिए भी आंतरिक सुरक्षा आवश्यकता है।

(-)
- विस्तृत = भिन्नता
क्षेत्र उपमहाद्वीप
- पड़ोसी (sudo-friendly)

- Natto (नेटो) friendly राज्यों द्वारा घिरा होना। जिसके कारण आंतरिक (ऊपर से मित्र, But अंदर से शत्रुता) को हवा देने मे उनकी भूमिका हो सकती है।

- भारत का असमान विकास का स्तर, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में असंतोष व उसकी अभिव्यक्ति स्वभाविक हो सकती है। ~~भारत की~~

- भा. की विशिष्ट सा० संरचना जिसमे सा० वर्गीकरण (जाति) (क्षैतिज) एकीकरण (अनुवत) (अनुजातियाँ) इत्यादि भी असंतोष को जन्म देता है।

- भा० की आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी या प्रौद्योगिकी विकास के स्तर को बनाए रखना, क्योंकि इन क्षेत्रों में शक्ति की सम्पूर्ण क्षमता का दोहन आवश्यक होता है।

- व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं गतिशीलता को सुनिश्चित ...

उपरोक्त सभी कारणों तथा समानतेसी विकास के लक्ष्य हासिल करने हेतु आंतरिक सु० आवश्यक शर्त है। ताकि I० को विकसित देशों की श्रेणी में शामिल किया जा सके।

विशेषताएं :

1) भारतीय संविधान एवं आंतरिक S. :->

संघवाद-

	India	vs USA
> S-C के संविधान अलग - 2	=> no	
> दोहरी नागरिकता	=> no.	
> स्वतंत्र न्यायपालिका	=> Integrated	
> State-Union service का parallel होना।	=> भारत में नहीं है	

1) अर्द्ध संघीय संरचना के अंतर्गत C-S के बीच शक्तियों का विभाजन तथा कानून व्यवस्था को बनाये रखने की जिम्मेदारी राज्यों के पास होना।

- कानून व्यवस्था आंतरिक सुरक्षा का अनिवार्य घटक होता है।

2) (A-355) के तहत केन्द्र को प्रदत्त शक्तियाँ :- किसी राज्य अथवा उसके भू-भाग में सशस्त्र बलों या सुरक्षा बलों की नियुक्ति का अधिकार।

3) A-356 के तहत प्रदत्त शक्तियाँ
base -> संवैधानिक व्यवस्था विफल होने पर कार्यपालिका-law making अधिकार to Centre.

4) राज्यसभा को राष्ट्रीय imp. से संबंधित ~~सूची~~ राज्य सूची के ~~किसी विषय के~~ आधार पर PO कानून बनाने का अधिकार।

5) स्वयं राज्यों द्वारा संघ से किसी impo विषय पर कानून निर्माण हेतु आग्रह किया जाना। इन सभी प्रावधानों के द्वारा संघीय सरकार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आंतरिक सुरक्षा को बनाये रखने

की शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

(A-371) के तहत् उद्देश्य को विशेष अधिकार प्रदान किया जाना, ताकि वे आंतरिक सुरक्षा में अवरोधक तत्वों को दूर कर सकें।

प्राथमिक / तेयक ← विकास एवं उग्रवाद के बीच संबंध

- विकास कम होने या न होने के कारण ⇓ असंतोष
- विकास होने किंतु विकास का लाभ स्थानीय लोगों को न मिलना ⇓ असंतोष

उग्रवाद के उद्भव का कारण बनता है।

भारत में क्यों imp. है

- bcoz 200 वर्षों तक औपनिवेशिक शासन के अधीन
  - tertiary sector का विकास
  - but प्राथमिक व द्वितीयक
- क्षेत्रीय असमानताएँ बढ़ी
- आदिवासियों को जमीन से विस्थापित
- no Job opportunity
- सिंगूर, यमुना एक्सप्रेस हेतु भूमि अधि०, SEZ नीति

विकास एवं उग्रवाद के बीच गहरा संबंध है, जो वि. से वंचित रहने वाले तथा वि० के लाभ से वंचित रहने वाले लोगों के बीच असंतोष के कारण उत्पन्न

होता है। असंतोष की मात्रा उग्रवाद के प्रकार और उसकी तीव्रता को निर्धारित करती है।

कारण

- असमान भू-आकृतिक संरचना के कारण उनके क्षेत्रों में प्रशासन की पहुँच ना होने के कारण विकास ना हो पाना। इससे वि० से वंचित लोगों में भेदभाव का अहसास होता है। अतः राष्ट्र या देश के प्रति विश्वास में कमी आती है। विश्वास की यह कमी अंततः असंतोष व उग्रवाद के उद्भव का कारण बनती है।

जैसे० नक्सल → आंध्रा, महाराष्ट्र, उड़ीसा → तटीय क्षेत्र → trade, मत्स्यन, परिवहन, पर्यटन, बंदरगाह, विकसित but भीतरी क्षेत्र में D.।

उदाहरण जैसे महा०, आंध्रा, उड़ीसा के भीतरिक भागों में अशांति का होना।

- विकास का लाभ स्थानीय लोगों को ना मिलने बल्कि बाहरी लोगों को मिलने से वहाँ के लोगों में असंतोष उत्पन्न होना, जैसे - जनजातीय क्षेत्रों में असंतोष, जोकि औद्योगिकरण के कारण उत्पन्न हुआ।

खनिजों का दोहन, जमीन का मुआवजा नहीं → रोजगार नहीं, शोषक समूह (

खुद नदी ⇓ साम्प्रदायिक संपत्ति की अवधारणा

विकास मॉडल गलत ⇒ उद्योगों का but आस-पास विकास, उपेक्षित विकास के टापू

- औद्यो० वि० का त्रुटिपूर्ण नीतियाँ जिन्होंने औद्यो० नगरों के विकास को ही सुनिश्चित किया जैसे जमशेदपुर, भिलाई, राँची ...

को प्रोत्साहन नहीं मिल सका। इससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार सृजन नहीं हो सका। ~~अर्थात~~

- औद्योगिक विकास के समर्थन के लिए कृषि विकास पर ध्यान नहीं दिया जाना। जबकि अधिकांश pop. के जीविकोपार्जन का साधन कृषि थी।
∴ कृषि व उद्योगों के बीच का सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाया।

- विकास नीतियों व कार्यों का भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित होना। ∴ कुछ क्षेत्रों में विकास हुआ। जबकि अन्य क्षेत्र उपेक्षित रह गये। विशेषकर पूर्वोत्तर भारत के राज्यों, छोटा नागपुर के पठार के क्षेत्र मे आदि।

उपरोक्त सभी कारणों से भारतीय भू-भाग में उग्रवाद, नक्सलवाद एवं आतंक हेतु उर्वरक भूमि प्राप्त हुई।

(उग्रवाद) / ~~उग्रवाद~~ ~~का~~ (Insurgency) ∴ ~~किसी भी~~ पिछड़े ~~क्षेत्र~~ मे ~~सैनिक व आर्थिक~~ से तात्पर्य है, किसी क्षेत्र विशेष में पिछड़े हुए लोगों के ~~समूहों~~ द्वारा गुरिल्ला (छिपकर युद्ध) (=युद्ध प्रणाली के माध्यम से स्थापित सत्ता के समक्ष चुनौती उत्पन्न करना।

विरोध - रूस ⇓ Intensity ↑
महात्मा ↳ साहस ↑

उग्रवाद के प्रकार

① क्रांति (Revolution) ② सैनिक विप्लव   गृह युद्ध (Civil War)

(← तीनों में गुरिल्ला)

→ अचानक घटित उथल-पुथल, जो अनियोजित, संक्षिप्त एवं स्थानिक होती है। विशिष्ट उद्देश्य के कारण रचनात्मक, निर्णायक व दूरगामी प्रभाव उत्पन्न करती है। ∴ प्रायः S-E पुर्न-निर्माण का कारण बनती है।

उदारवादी
↳ छोटे परिवर्तन

② सै० विप्लव :- एक गुप्त प्रकार की कार्यवाही, जो सशस्त्र सेना के कमाण्डर द्वारा सत्ता रूढ़ सर्वोच्च नेता को अपदस्थ करने हेतु सम्पन्न होती है। इसमें नागरिकों की भागीदारी नहीं होती है। इसकी ~~प्रक्रिया~~ / तैयारी लम्बी किन्तु प्रक्रिया अति तीव्र एवं अचानक होती है।

③ गृह युद्ध :- किसी देश के दो अथवा अधिक गुटों के बीच सशस्त्र संघर्ष होना। ~~विस्तार की~~ प्रक्रिया में गुटों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों एवं सेनाओं तथा लोगों को निमंत्रण देना। जबकि ये गुट उसी देश के नागरिक होते हैं। इसमें नागरिक व सशस्त्र सेना दोनों की भागीदारी।

Classification of Insurgency

प्रभाव/प्रभावित क्षेत्रों के आधार पर

- स्थानिक / लघु
  - N.E. राज्यों के उग्रपंथी संगठन
  - उदा :- उल्फा, सुल्फा, NSCN ⇒ वृहत नागालैण्ड की स्थापना
- अर्न्तक्षेत्रिय / मध्यम
  - नक्सलवाद / पंथ (L.S.)
- राष्ट्रीय
  - लिट्टे
- अंतरा.
  - आतंकवाद
  - बड़े पैमाने पर लोगों को प्रभावित
  - प्रभाव अलग
  - दबाना

हस्तगत समानता ⇒ कृत्रिम असमानताओं की समाप्ति

आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ

(A) धार्मिक उन्माद की समस्या :- (धा० आतंकवाद)

(कट्टर होकर धर्म के प्रति सोचना + प्रसारित करना) :-

क्या धार्मिक कट्टरता तथा किसी ईश्वर विशेष के नाम पर अन्य धर्म के मतावलंबियों के विरुद्ध घृणा के कारण हिंसा के मार्ग पर जाना, अथवा उसे सही ठहराना। (वैचारिक)

⇓

Example :- हिटलर की यहूदी विरोधी नीति

धर्म की अति विकृत व्याख्या का परिणाम होता है, तथा कई बार राज० उद्देश्यों से संचालित भी होता है। प्राय: इसमें बस गलत तरिया को मुक्ति या मोक्ष या स्वर्ग का मार्ग बताने की भी कोशिश की जाती है।

धर्म ⇒ व्यक्तिगत स्तर ⇒ समूह ← दायरा विस्तारित; leaders ⇒ साम्प्रदायिक

व्यक्ति विशेष को धार्मिक महत्त्व — कट्टरपंथ की समस्या उत्पन्न हो सकती है — धर्म में केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति जितनी अधिक

(हाशिये पर टिप्पणियाँ:) गठबंधन; प्रशासन/धर्म; लौकिक - धर्म ⇒ secular भाव; nonsecular भाव

12th to 14th ⇒ ईसाई vs मुस्लिम ⇒ क्रुसेड ⇒ कारण Political ना कि Religious ⇒ (धा० उन्मा० नहीं)

कारण :-

✓ अल्पसंख्यकों से भेदभाव किया जाना, तथा उनके प्रति धर्म के नाम पर दमनात्मक नीति का अनुसरण किया जाना। इसके अतिरिक्त प्रायः रंगभेद, जातिय एवं प्रजातिय आदि आधारों पर भी दमनात्मक कार्य धार्मिक उन्माद का रूप धारण कर लेती है, क्योंकि कार्यवाही से प्रभावित व्यक्ति या व्यक्ति समूह भी किसी धर्म विशेष के अनुयायी होते हैं।

✓ किसी धर्म विशेष को सर्वश्रेष्ठ मानना, और उसे स्वर्ग प्राप्ति का एक मात्र मार्ग के रूप में प्रचारित करना।

✓ अपने धर्म के प्रति कट्टर लगाव, और इसे अधिकाधिक क्षेत्रों तक प्रसारित करने की इच्छा तथा लक्ष्य

✓ बाहरी शक्तियों के द्वारा किसी धर्म विशेष के लोगों में धा० उन्माद को भड़काने का प्रयास किया जाना।

✓ रा० सरकारों के द्वारा किसी ध० या फिर क्षेत्र विशेष के लोगों के साथ उपेक्षा पूर्ण व्यवहार किया जाना। यानि लोगों को उपेक्षित किये जाने का अहसास होना।

परिणाम :-

1) साम्प्रदायिक दंगों की शुरुआत की संभावना उत्पन्न होना जो कि I. S. पर एक खतरा हो सकता है।

2) धर्म के नाम पर या जातियता के नाम पर अलग राष्ट्र के गठन की माँग उठना, ताकि उस धा०

3) किसी भी देश मे सा० विघटन को बल मिलता, इससे विभिन्न धा० समूहों के बीच या फिर नृजातीय समूहों के बीच एकी० की प्रक्रिया बाधित होती है।

4) सुनियोजित एवं संगठित प्रकार के आंदोलनों को जन्म देना जैसे - आलगावदा, लिट्टे, लश्कर-ए-तोयबा etc.

5) विदेशी या बाह्य राज्य एवं नॉन स्टेट एक्टर के द्वारा (छद्म war) प्रारंभ किये जाने की संभावना उत्पन्न होना जैसे- J&K की स्थिति

6) धार्मिक कटुता में बढ़ोतरी के साथ - साथ किसी C० का आ० विकास दुष्प्रभावित होना, क्योंकि संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा ऐसी परिस्थितियों से निपटने पर खर्च होता है।

भारत के लिए महत्व है-

- भारत में बहुधार्मिक सामाजिक संरचना की उपस्थिति के कारण यह अति संवेदनशील मुद्दा है। इससे धा० - सा० विघटन को प्रोत्साहन मिल सकता है, जो कि आंतरिक सुरक्षा व राष्ट्रीय सु० दोनो ही दृष्टिकोण से हानिकारक है।

- भारत में केन्द्रीकृत धर्मों की उपस्थिति होना। इससे धा० उन्मा० से पूरे देश के प्रभावित होने की संभावना हो सकती है।

- धा० व नृजातीय आधार पर भारत के प्रति

पड़ोसियों का शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण है, ऐसी परिस्थिति में भारत के आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप करने की संभावना उत्पन्न हो सकती है क्योंकि सम्पूर्ण दक्षिण एशिया धार्मिक आधार पर एक नहीं है।

- भारत में राजनीतिक स्तर पर धा० ध्रुवीकरण पहले से विद्यमान है अतः धार्मिक उन्माद की स्थिति में यह ध्रुवीकरण और भी अधिक बढ़ सकता है। इससे भारत का लोकतांत्रिक ढाँचा भी दुष्प्रभावित होगा।

उग्रवाद →
- आतंकवाद
- नक्सलवाद
- उ० पू० के अलगाववादी आंदोलन

} Reason – भारत की स्थिति

उग्रवाद = जो स्थापित व्यवस्था का उग्र विरोध

उत्पत्ति का कारण → "P – S – E असमानता की स्थिति तथा "नागरिक मूल्यों या अधिकारों की अनुपलब्धता

- विउपनिवेशीकरण :→ (Before 1950's) :–

पूर्वी यूरोप, एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका → स्वतंत्र देशों का गठन

- 20वीं सदी का उत्तरार्द्ध :– लोकतांत्रिक प्रक्रिया के वैश्विक स्तर पर विस्तार की अवधि

⇓

लोकतांत्रिक सरकारों का गठन < P, S, E समानता हेतु अकांक्षा उत्पन्न

UNO द्वारा मानवाधिकारों की घोषणा।

Political right – Left (S–E Rights)

को अभिव्यक्तियाँ ... [illegible]

सरकारों के उत्तरदायित्व में वृद्धि
⇓
financial crisis के कारण सरकारों के सामने challenge उत्पन्न होने लगे। जिन्हें दूर करने में सरकारों की विफलता
धीरे-2 इस प्रक्रिया से लोगों मे लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रति अलगाव
⇓
अंततः राजनीतिक मोहभंग की स्थिति उत्पन्न
⇓

विफल — source — cs- को सही पोटन नहीं; प्रौद्योगिकी

? {उपरोक्त सभी प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप कानूनी-प्रक्रिया की विफलता से गैर कानूनी राजनीतिक एजेण्डा को केन्द्र में ला दिया। चूँकि 20वी सदी का उत्तरार्द्ध C. W. का भी काल था, जिसमें वैश्विक स्तर पर वैचारिक टकराहट की स्थिति बनी हुई थी। प्रायः किसी भी क्षेत्र के जन आंदोलन को पूँजीवादी C. द्वारा समाजवादी, साम्यवादी M. कहकर उनका दमन न किया जा रहा था। ∴ इन परिस्थितियों में विश्व के विभिन्न C. में समाज के बड़े वर्ग में राज. मोहभंग का लाभ विभिन्न उग्रपंथी, नक्सलपंथी और आतंकी संगठनों ने भी उठाया। इससे स्पष्ट है कि इस परिस्थिति का विकास केवल कानून व व्यवस्था की समस्या नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों की विफलता का परिणाम रही।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में भी लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया शुरू हुई, जो कि एक स्वस्थ प्रवृत्ति रही, क्योंकि लोकतंत्र की सफलता हेतु लोकतांत्रिक प्रक्रिया अनिवार्य शर्त होती है | बाद के दिनों में असमान आ० विकास की प्रक्रिया से लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया अवरुद्ध हो गयी, क्योंकि त्रुटिपूर्ण एवं विकृत आ० विकास स्वभाविक परिणाम हुआ, अंतः क्षेत्रिय, अंर्तक्षेत्रिय, अंतःव्यक्तिक आदि प्रकार की असमानता। लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया में विचलन का स्वभाविक परिणाम हुआ वैकल्पिक मार्ग की तलाश किया जाना | इसी पृष्ठभूमि में 1970 के दशक में सम्पूर्ण क्रांति की शुरुआत जे०पी० नारायण द्वारा की गई |

Process of Democratisation

राजनीतिक प्रक्रिया से लोगों को जोड़ता

? { राजनीतिक विचलन को एक और स्वरूप राजनीति के अपराधीकरण और अपराध के राजनीतिकरण के रूप में दिखाई दिया | 1980 के दशक में शुरू हुई यह प्रक्रिया 2000 तक चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी | केन्द्र एवं रा० के स्तर पर यह प्रक्रिया एक समान रूप से दिखी | इससे भारत में भी बड़े पैमाने पर P० अलगाव और मोहभंग की स्थिति उत्पन्न हुई | इस प्रकार उग्रवाद, नक्सलपंथ एवं आतंकवाद के अंकुरण एवं विकास की पृष्ठभूमि निर्मित हो गई |

इस प्रक्रिया को ...

संस्थानों में अपराधिक लोक प्रतिनिधित्व की भी भूमिका रही, क्योंकि स्वतंत्रोत्तर चुनावी राजनीतिक प्रणाली में केवल कुछ लोगों अथवा परिवारों का वर्चस्व स्थापित हुआ। जिनका शासन भी स्थापित हुआ। इससे जन सामान्य में लोकतंत्र से मोहभंग हो गया।"

नक्सलपंथ / वामपंथी उग्रवाद / न०वा० अलगाववादी
⇓
अलग राज्य का गठन
Reason — भावनात्मक लगाव

उग्रपंथ
हिंसात्मक तरीके अपनाना

Qus न० के उद्भव के कारणों का विश्लेषण ?

Qus :- भारत में नक्सलपंथ के क्रमिक विस्तार एवं उसके वर्तमान स्वरूप पर चर्चा कीजिए।

Qus शुरू होने से अब तक क्या परिवर्तन

Qus न० की समस्या के समाधान के लिए उठाए गए कदम → पहले से चली आ रही नीतियाँ
→ new Initiative

Qus सुझाव ? → आम सहमति हो

उद्भव के कारण :-

I) स्थानीय

1) लोकतांत्रिक प्रक्रिया का अवरुद्ध या बाधित होना, व इसके कारण समाज के बड़े वर्ग में राजनीति से अलगाव व मोहभंग की स्थिति
⇓
वैकल्पिक मार्ग की तलाश
⇓
वामपंथी उग्रवाद => (किसानों की तरफ से हिंसक संघर्ष की शुरुआत)

2) भारत में S-P-E असमानता एवं शोषण की स्थिति विद्यमान होना।

3) बेरोजगारी एवं असंतुलित विकास के कारण असंतोष एवं इससे उत्पन्न उग्रपंथ को बल मिलना, जैसे - :-
(राजस्थान मे गरीबी but denied Justice की स्थिति नही)

4) भूमि सुधार कानूनों का प्रभावी ढंग से लागू न होना। (जमींदार अधिकारों को छोड़ने को तैयार नही)
(अब तक पूरी तरह लागू नही)

5) भूमि हदबंदी कानूनों का प्रभावी ढंग से लागू ना होना। (Maximum limit)
(बिहार etc. ठीक से लागू)

जनजाति हस्तांतरण की समस्याएँ

6) काश्तकारी सुधार कानून का भी ठीक से क्रियान्वयन नहीं

(i) लगान के निर्धारण का अधिकार ... को

(ii) उत्पादन का 20 to 25 %

(iii) बेदखली को रोकना ↓ जमींदार / भूस्वामी के द्वारा द्वारा भूमि की बिक्री होने पर

(iv) मिल्कियत का अधिकार ↓ बिक्री होने पर खरीदने का प्रथम अधिकार काश्तकार को

लागू किए गए → केरल, W.B, कर्नाटक में लागू → b'coz of वामपंथी प्रभाव

7) कृषि विकास का अपर्याप्त स्तर

↳ हरित क्रांति का लाभ भी एक समान रूप से नहीं पड़ा

अधिकांश लोग आज भी कृषि व संबंधित गति० पर

8) त्रुटिपूर्ण भूमि अधिग्रहण की नीति :-

(i) आदिवासी क्षेत्रों पर प्रभाव होना

↓ Deroot होना → विकास का लाभ नहीं

(ii) SEZ का उत्पात → (सिंगूर, यमुना एक्सप्रेस)

new बिल ⇐
- भूमि धारक को प्रतिदान का प्रावधान
- कृषक मजदूर हेतु कोई प्राव० नहीं

9) अच्छा प्रशासन का अभाव तथा कानूनों का कमजोर रूप में लागू होना

Denied Justice & मानवीय गरिमा का हरण होना

10) भूमण्डलीकरण का प्रभाव → जनजातियों के संदर्भ में

↳ P-E-S-धार्मिक विश्वास टूटे हैं।

↓ सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए समर्थन

II) माओवादी विचारधारा का प्रभाव :-

मार्क्सवाद का चीनी रूपांतरण → माओवाद

वर्ग संघर्ष b/w श्रमिक - पूँजीपति — वर्ग संघर्ष b/w ग्रामीण शहरी

क्रांति :-

U → R — R → U

नक्सलवाद → Indian version of माओवाद

↳ वर्ग संघर्ष में विश्वास

↳ शुरुआती चरण में ग्रामीण क्षेत्रों में केन्द्रित

starting में नक्सवाद → bcoz शुरू from नक्सलबाड़ी

⇓

बाद में वामपंथी उग्रवाद

विकास के विभिन्न चरण :- now तीसरे चरण में है

उद्देश्य के स्तर पर परिवर्तन नहीं

but कार्यवाही change

प्रथम चरण :- 1967 से लेकर 1990 के दशक तक दिखायी देता है

↳ प्रकृति स्थानिय

↳ दूसरे क्षेत्र के उग्रपंथियों से कम संबंध

वामपंथी उग्रवाद की शुरुआत जिन - 2 क्षेत्रों से हुई वह उन्हीं क्षेत्रों तक सीमित रहा। इसकी स्थानिय प्रकृति के कारण संघर्ष के तरीकों में भी अंतर दिखायी पड़ता है, जैसे - तेलंगाना संघर्ष हिंसक प्रकृति का, जबकि प० बंगाल में नक्सलबाड़ी मूव० अहिंसक प्रकार का रहा। ~~सरकारी दमन भी नहीं था।~~ स्थानीय स्तर पर दमन गठित

- 1967 में प० बंगाल उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल U.P व J&K के कम्युनिस्ट नेताओं का एक सम्मेलन आयोजित हुआ और

संसदीय मार्ग अपनाने का निर्णय लिया गया। वही निर्णय के आधार पर 1968 में All India Commitee on Communist Revolutionary का गठन किया।

1974 में इसके कुछ नेताओं द्वारा भाकपा- माले (मार्क्सवादी लेनिनवादी) का गठन किया गया। जिसने पुनः संसदीय मार्ग / चुनावी मार्ग को अपनाया।

- प्रथम चरण में ही सशस्त्र संघर्ष को मजबूती एवं विस्तार देने के उद्देश्य से 1969 में कन्हाई चटर्जी के द्वारा माओवादी कम्युनिस्ट सेण्टर की स्थापना।

- 1980 में कोंडापल्ली सीतारमैय्या → पीपुल वार ग्रुप का गठन हुआ।

- इस चरण में उग्र० की मुख्य रणनीति भूस्वामियों एवं धन स्वामियों को निशाना बनाना, तथा स्थानीय स्तर पर इनके विरुद्ध संगठित विरोध करना था अर्थात् यह एक बुद्धिजीवी Movement के रूप में उभरा व चीनी नेताओं के माओवादी दर्शन के प्रभाव में हिंसक संघर्ष का मार्ग अपनाया गया।

- ये उग्रपंथी अलगाववादी नहीं थे, बल्कि स्थापित व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन चाहते थे। अतः इनके प्रति सरकारी सहानुभूति दिखती है।

द्वितीय चरण :- (संक्रमण का चरण) → विचार / → कार्यप्रणाली

इसमें नक्सलपंथी आं० का स्वरूप स्थानीय से राष्ट्रीय हुआ, तथा इसी प्रवृति के अंतर्गत एक "रेड कॉरिडोर" का विकास हुआ, जिससे लगभग 13 राज्यों के 125 जिले प्रभावित हैं।

(हाशिये पर: only भूस्वामियों ... विरुद्ध; सरकार / Security के विरुद्ध नहीं; ~~RPK~~ बुद्धिजीवी रूप आंदोलन)

आक्रमण के इस चरण में इनकी नीतियों व दृष्टिकोण में दोहरापन दिखाई देता है। अर्थात् अलगाववादी ना होने के बावजूद सशस्त्र बलों पर आक्रमण करना। इसीलिए इस आंदोलन के प्रति सरकारी सहानुभूति समाप्त हुई व M० के प्रति कठोर दमनात्मक रणनीति अपनायी गयी ex है → 2003, कोबरा ग्रुप का गठन, ऑपरेशन ग्रीन हन्ट चलाया जाना। स्थिति सुधरी ⇒

तृतीय चरण :- (नाग० संस्थान + security establishment पर आक्रम)
(2004-05 के बाद) सरकार पर दबाव डालना
मनोबल ↓ दबाव on नक्स० ↓ Arms प्राप्त
रणनीति
लूट-पाट

- इस चरण में बिखरी हुई शक्तियों को एकीकृत करने की कोशिश की जा रही है। जैसे सितम्बर, 2004 में MCC व पीपुल्स वार ग्रुप के विलय से CPI(M) की स्थापना होना। इसका aim जन संपर्क को बढ़ाना एवं अन्य देशों से सहयोग प्राप्त करना। इसके अतिरिक्त विदेशी state एवं non-state actors के साथ गठबंधन तथा अपराधिक संगठनों के सहयोग के कारण इनकी स्थिति मजबूत हुई है।
- इनके आक्रमण की प्रकृति में पुनः परिवर्तन दिख रहा है, अर्थात् इनके द्वारा नाग एवं सुरक्षा संस्थापनों पर आक्रमण किया जा रहे ex → जैसे, पुलिस थाना पर आक्रमण इत्यादि।
- ऐसे आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य है, अस्त्र-शस्त्र की प्राप्ति एवं संसाधनों में वृद्धि करना। शस्त्र बलों व पु० के मनोबल को कमजोर करना। शस्त्र ब० के दबाव तथा पुलिस पिकेटिंग के लिए गठित थानों को बंद करना। लोगों

मे भय उत्पन्न करके सरकार पर नागरिक दबाव में वृद्धि करना।
- इस चरण में लूट, अवैध वसूली, तस्करी आदि से वित्तीय स्त्रोतों का बढ़ाने का प्रयास भी दिखता है।

प्रभाव :→

→ विकास कार्यों का दुष्प्रभावित होना, अनेक क्षेत्रों में कृषि बर्बाद होना व पूँजीपतियों का पलायन। (e.g. बिहार, झारखण्ड)

→ नक्सल प्रभावित क्षेत्रों से संसाधनों का प्रभावशाली दोहन नां हो पाना, अतः इनकी गतिविधियों से वही असमानता बढ़ती जा रही है, जिसे ये दूर करना चाहते हैं।

- प्रभावित राज्यों में पूँजी निवेश की संभावना कमजोर होना। इसलिए विकास के लिए प्रभावी नीतियों का निर्माण नहीं हो पा रहा है।

- कानून - व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना, क्योंकि इसका सीधा संबंध लोगों की सुरक्षा, कानूनों के क्रियान्वयन एवं विकास से हैं। अर्थात उग्रपंथी जिन कारणों को दूर करने के लिए संघर्ष चला रहे हैं। इनके कार्यों से उन्हीं कारणों की वृद्धि होती जा रही है।

समाधान :→

सरकारी प्रयास

- राज्य पुलिस का आधुनिकीकरण करना अर्थात बेहतर किस्म के अस्त्र - शस्त्र की आपूर्ति सुनिश्चित करना

- नक्सलप्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षा व्यय को बढ़ाना, जिसमें आत्म समर्पण कर चुके नक्स० के पुर्नवास का व्यय भी शामिल है।
- विशेष अवसंरचना संबंधी व्यय में वृद्धि करना जैसे — 11वीं 5yp में 500 करोड़ की राशि आवंटित की गयी। 12वीं ,, ,, 1100 करोड़ ,, ,, प्रस्तावित है।
- आतंकवादी, साम्प्रदायिक एवं वामपंथी हिंसा से पिड़ित लोगों व उनके परिवार के सदस्यों को केन्द्रीय सहायता उपलब्ध करना। इसके लिए 3 लाख रु न्यूनतम सीमा निर्धारित की गयी है।
- समीक्षा एवं निगरानी तंत्र की व्यवस्था करना, जो कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लिए चलायी गयी नीतियों के क्रियान्वयन पर निगरानी रखेगा।
- 12वीं y में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में नक्सल विरोधी M- को क्षेत्रिय लोगों के साथ जोड़ने की कोशिश की गयी है।

नई पहल :-

- Integrated कमान का गठन => सिविल + सु० अधिकारी दोनों शामिल होंगे।
- सिविल अधिकारी नागरिक सुवि० का उपलब्ध कराने के लिए जिम्मेदार, जबकि सु० अधिकारी न० विरोधी अभियानों की मॉनिटरींग करेगा।

✓ स्थापित कमान एवं नियंत्रण ढांचा की पुर्नस्थापना

इसमें CRPF के महानिरिक्षक व नक्सल रोधी टास्क फो- के महानिरिक्षक के बीच समन्वय स्थापित करने पर ब- दिया गया है।

✓ न० प्रभावित क्षेत्रों में किलाबंद पुलिस थानों की स्थापना करना, ताकि जन सामान्य की सुरक्षा

सुनिश्चित करके उन्हें सरकार समर्थक बनाया जा सके। ऐसे 100 पु० था० की स्थापना का लक्ष्य है। जिसके व्यय में C एवं S का हिस्सा 80 : 20 है।

- एक अधिकारी प्राप्त अधिकारी दल का गठन करना, जोकि नक्सलपंथियों के साथ गठन वार्ता के लिए जिम्मेदार होगा।
- प्रभावित क्षे० में 12,000 अतिरिक्त पु० अधिकारियों की नियुक्ति की अनुमति देना। (SPO)

सुझाव :-

- पुनर्वास नीति के समीक्षा की आवश्यकता है, ताकि आत्मसमर्पण के बाद नक्सलियों को समाज की मुख्य धारा में शामिल किया जा सके।
- पुनर्वास नीति में मनोवैज्ञानिक पुनर्वास का प्रावधान शामिल करने की आवश्यकता है, अर्थात् आत्मसमर्पण के बाद उनकी काउंसलिंग को प्रभावी बनाना चाहिए, ताकि भविष्य में पुनः उग्रपंथ की ओर उनके झुकाव की संभावना समाप्त की जा सके।

आतंकवाद तथा आतंकी चुनौती की समस्या

प्रश्न के आयाम → तात्पर्य एवं कारणों का परीक्षण
→ आतंकवाद का स्रा० आधार तथा प्रकार
→ भारत में आतं० का स्वरूप / एवं प्रकृति तथा अंत० आ० के साथ उसकी सम्बद्धता
→ आ० के लक्ष्य तथा उनकी कार्यप्रणाली
→ समाधान का प्रभावी तरीका

आतंक — आतंकवाद → वाद → विचारधारा / सिद्धांत → बुद्धि

आतंक ⇓ भय ↓ रणनीति एवं कार्यवाही

→ Science & Tech.

I) ⇒ बुद्धि के दुरुपयोग + S&T के अभिशाप का परिणाम

आ० वास्तव में बुद्धि के दुरुपयोग तथा शोधों के अभिशाप के कारण उत्पन्न एक गंभीर चुनौती है। जोकि किसी भी प्रशान्त संरचना को ध्वस्त करने में सक्षम है। आ० हिंसा या हिंसा की धमकी का उपयोग तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष की एक विधि तथा रणनीति है। इस रणनीति में प्रचार एक आवश्यक तत्व है, यद्यपि यह अपूर्ण एवं अस्पष्ट है।

Before freedom ↳ गरीबी

II) उत्पत्ति का कारण :-

1) वैज्ञानिक मनोवृत्ति का अभाव :- (वह प्रेरणा जो व्यक्ति को ~~सभी प्रकार~~) चूँकि वैज्ञा० मनोवृत्ति व्यक्ति को सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त करती है, और उसे उपयोगिता के अनुसार आचरण करने को प्रेरित करती है।

शिक्षा ↳ scientific Temperament का अभाव

2) सहिष्णुता का अभाव :- अतः धा० - सांस्कृतिक - भाषायी आदि नृजातीय मूल्यों के आधार पर हिंसक संघर्ष की संभावना उत्पन्न होती है जोकि आतंकवाद को जन्म

3) नागरिक अधिकारों की अनुपलब्धता ⇒ राज० अधिकारों तथा विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दमन, प्रेस की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करना आदि कारणों से भी T को बल मिलता है।

4) अति महत्वाकांक्षा ⇒ (व्यक्ति कम समय के कम प्रयास से बड़ी सफलता तथा उसकी प्राप्ति हेतु दृढ़ इच्छा शक्ति का होना)

जिसके कारण वैचारिक प्रतिबद्धता विकसित होती है, जो वि T० एवं आतंकवाद की अनिवार्य शर्त है।

5) हिंसा की विचारधारा में विश्वास करना ⇒ व इसे समर्थन देने वाले विभिन्न धर्म ग्रंथों के उद्धरण का प्रभाव ⇒ जैसे old Testament (ईसाइयों का प्राचीन धर्म ग्रंथ) एवं इस्लाम के विचारों को धा० उन्मादियों के द्वारा तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया जाना, जोकि T० के प्रसार में सहायक होता है।

old टेस्टामेन्ट में आँख के बदले आँख

6) राजनीतिक लाभ प्राप्ति की इच्छा ⇒
~~पंजाब में~~ जैसे राजनीतिज्ञों द्वारा असामाजिक तत्वों का सहयोग लिया जाना, शत्रु देश द्वारा विरोधियों के असामाजिक तत्वों को समर्थन दिया जाना etc. —

7) अल्पसंख्यक समु० द्वारा मदरसा शिक्षा में अधिक विश्वास इससे अक्सर मजहबी व नृजातीय शिक्षा को प्रोत्साहन मिलता है, जो वि आत० के प्रसार का imp कारण है।

8) धा० दृष्टि से प्रचुर दान देने की अभिलाषा ⇒ इसके माध्यम

से आतंकवादियों के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध करवा।

9) संगठित अपराध तथा अपराधियों एवं आतंकवादियों के बीच स्थापित होना :- इससे आतंकवाद की संगठनात्मक क्षमता में वृद्धि होती है, तथा तस्करों के साथ संबंध बनने से वित्तीय स्थायित्व भी सुनिश्चित होता है।

10) प्रौद्योगिकी विकास से आतंकवादियों की शक्ति एवं क्षमता में वृद्धि होना :- विशेषकर परमाणु अस्त्र, रासायनिक एवं जैविक हथियार तक उनकी पहुँच सुनिश्चित (रोधकस)

11) सूचना एवं संचार साधनों का विकास व वैश्वी० माध्यम से उन तक आतंक० गुटों की पहुँच होना

12) भारत की असमान भूआकृति या भूसंरचना इससे आतंकी मे आसानी होना → सीमा पर बाढ़ न लग पाना। पंजाब मे but J&K मे पट कोई नहीं

old टेक्नोलॉजी से आँख के बदले आँख

13) वैदेशिक संबंधों में शत्रुता — इसके कारण विदेशी S. non-state actor के साथ आतंकी गुटों का संबंध होना। उन्हें वित्तीय सहायता, अस्त्र-शस्त्र की प्रशिक्षण etc. सुविधाएँ मिलना। J&K पाक, N. चायना

III) सामाजिक आधार :-

(1) निष्ठुर अधिकारी वर्ग :- प्रायः शक्तिशाली राष्ट्रों एवं शासकों द्वारा कमजोर राष्ट्रों के विरुद्ध शोषण
बलात ...

2) क्रांतिकारी संगठन :- साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों के उन्मूलन एवं स्वाधीनता आंदोलन के सफल संचालन के उद्देश्य से गठित संगठन जैसे - JKLF, NSCN (नेशनल सोशलिस्ट कौंसिल ऑफ नागालैंड)

3) उग्रसुधारवादी समूह :- अत्याधुनिक एवं प्राणघातक असाधनों से सुसज्जित उग्र विचारों वाले व्यक्ति, जिन की सुधारवादी प्रचारों एवं अपील के आधार पर सा० क्रांति उत्पन्न करने की प्रबल इच्छा होती है, जैसे- पंजाब के विभिन्न लड़ाकू समूह, नक्सलवादी या No अमेरिका Ku-Klux-Klan

4) संवेदी व्यक्ति (Impatuous person) :- (ऐसी प्रवृत्ति जिसमें व्यक्ति अपने धर्म को श्रेष्ठ को माने) विभिन्न संवेदी नागरिक सेना एवं पुलिस के कर्मचारी अधिकारी आदि, जो सामूहिक लूट, बलात्कार, धमकी देने एवं भय उत्पन्न करने की विविध गतिविधियों का प्रयोग करते हैं।

5) सड़क छाप अपराधी :- सार्वजनिक स्थलों पर हथगोला फेंकने वाले, अपहरणकर्ता, मादक पदार्थों के तस्कर, नागरिकों के अस्त्र-शस्त्र छिनने वाले आदि)

आतंकवाद का प्रकार

1) धनात्मक / भावात्मक आतंकवाद :-

समाज के किसी व्यापक हित या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आतंकवादी गतिविधियाँ अपनाना, अर्थात यह

2) दण्डात्मक / अभावात्मक मा० :→ समाज के व्यापक हितों की उपेक्षा करके अपने किसी निहित स्वार्थ की सिद्धि करना) में

∴ यह देश की प्रगति तथा एकता एवं अखण्डता के लिए खतरनाक भी होता है | उदा : राजनीतिक आतंकवाद

3) राज्य द्वारा प्रवर्तित आतंकवाद :→ अधिकांशतः किसी निर्बल या कमजोर राष्ट्र द्वारा यह प्रायोजित होता है | ∴ इसमें अक्सर छद्म w० का सहारा लिया जाता है |

4) गुट द्वारा प्रवर्तित T. :→ राष्ट्रीय अथवा अंत० स्तर पर किसी राजनीतिक गुट द्वारा प्रायोजित किया जाता है | इसलिए यह प्राय: पृथकतावादी M० के रूप में उभरता है |

5) अपराध संबंधित T. :→ इसमें प्राय: आतंक फैलाने के लिए हिंसा का साधन के रूप में use होता है | अर्थात यह प्रेरणा के लिए P० सत्ता के बजाय धन का सहारा लेता है |

6) नार्को आतंकवाद :→ इसमें धन हेतु मादक पदार्थों की तस्करी की जाती है, और इस तस्करी को सुनिश्चित करने के लिए अपराधियों का सहारा लिया जाना |

7) विवाद प्रेरित T :→ इसमें किसी विशिष्ट मुद्दों से प्रेरित होकर आतंकवादी गति० संपन्न होती है, जैसे चुनाव में विजय, भूमि संघर्ष, अधिकारों पर प्रतिबंध etc.

8) मेट्रो T. :- (उद्देश्य - अधिक लोग प्रभावित हो)
प्राय : key white collars

इसमे मेट्रो नगरों के नागरिक संस्थापनाओं पर आतंकी आक्रमण को लक्ष्य बनाया जाता है। जिससे अधिकाधिक क्षति हो सके।

भारत में आतंकवाद की प्रकृति / स्वरूप

भारत में सक्रिय आतंकवादी संगठनों व आतंकवाद की चार प्रकृति दिखती है, जो कि दो पहलुओं पर आधारित है।

(1) धार्मिक आतंकवाद :- जैसे पंजाब का T., जिसे वर्तमान में पुनर्जीवित करने की कोशिश ISI द्वारा हो रही है। (प्रमाण प्राप्त हुए)

(a) बब्बर खालसा इंटरनेशनल

(2) क्षेत्रिय T. :- {J&K एवं N.E. राज्यों का अ
पृथक क्षेत्रिय मांग को लेकर

E.g. JKLF (लिबरेशन फ्रंट),
हिजबुल मुजाहिदीन पृथक राज्य के समर्थक है।
मुस्लिम जाम्बेहल, हरकाते मुस्लमीन
कश्मीर के पाकिस्तान मे विलय के समर्थक है।

(3) जातियतावादी T. :- जैसे बोडो एवं बोरस
संगठन

गैर - असम के निवासियो को बाहर निकालना।
+
मतदाता सूची से बाहरी लोगों क

d हेरलाई
में
असम के
मांग

N.E.

(5) राजनीतिक आतंक :— किसी विशिष्ट राज० दल से सम्ब...
जैसे नक्सलवाद

विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है, कि I० में I० के दो पहलू प्रमुख हैं। प्रथम :— पाक आतंकवाद – जो कि देश के अंदर उपस्थित मतभेदों को शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण रखने वाले पड़ोसी देश अपने आंतरिक संघर्षों को छिपाने एवं नागरिकों का ध्यान बँटाने के लिए अथवा I० के साथ संघर्ष के कारण I० में आतंकवाद को प्रेरित कर रहे हैं, जैसे - नागाओं एवं मिजो जनजाति को चीन का समर्थन तथा सिक्खों एवं कश्मीरी मुसलमानों को पाक० का समर्थन एवं सहयोग मिलना। इससे पुलिस, अर्द्धसैनिक बलों एवं सेना का लगभग आधा हिस्सा आतंकवादियों से संघर्ष में उलझा हुआ है। इससे भारत० सुरक्षा पर चुनौती के साथ-2 कानून व्यवस्था की समस्या भी उत्पन्न हो रही है।

दूसरा इस्लामिक शक्तियों का आतंकवाद, जो कि इस्लामिक C० की कट्टरवादी शक्तियों की उपज है। ये शक्तियाँ भारत के अतिरिक्त मिस्र, अल्जीरिया आदि क्षेत्रों में भी खतरा उत्पन्न कर रही हैं। इसलिए I० का आतंकवाद वैश्विक T० का एक हिस्सा बन गया है।

आतंकवाद / आतंकवादी के लक्ष्य है

- भारत में सुख शांति को disturb करना — approach → श्रृंखला बद्ध कार्य० / धा० स्थलों पर आक्रमण / सेना / बोधगया

=> चयन depend on → असंतोष ज्यादा बड़े लोगों में

संप्रभुता ← → Criminal Sentiment

लोग ज्यादा प्रेरित
⇓
सरकार पर दबाव
⇓
माँग पूर्ण

- जन संप्रभुता पर आक्रमण है — जैसे - संसद पर आक्रमण
- आर्थिक वि० को अवरुद्ध या बाधित करने का प्रयास तथा पर्यटन को हानि पहुँचाना। (Ex - J&K, बोधगया, मुम्बई)
- विधि व्यवस्था को बिगाड़ने का प्रयास जैसे - श्रृंखला बद्ध धमाकों का उपयोग
- निर्दोष नागरिकों की हत्या करना → Terror → लोगों का सरकार पर दबाव
  जैसे ऐसे स्थानों को विस्फोट हेतु चुनना, जो भीड़ वाले हों।
- राजनीतिक स्थिरता पर चुनौती उत्पन्न करने का प्रयास तथा भारत की एकता एवं अखण्डता पर चुनौती उत्पन्न करना। इसके लिए ये अलगाववादियों को समर्थन देते हैं।
- भारत के वैज्ञानिक व एवं तकनीकी प्रगति को बाधित करने का प्रयास और उपयोगी तकनीकों की प्राप्ति की कोशिश करना जैसे इनके द्वारा इण्डियन इंस्टी० ऑफ साइन्स, बंगलौर पर आक्रमण।

(IB report में — वैज्ञा० संस्थानों पर आक्रमण की योजना)

धार्मिक सद्भाव को बिगाड़ने का प्रयास करना जैसे- धार्मिक स्थलों पर आक्रमण, किसी विशिष्ट दिन अथवा त्योहारों को चुनना

(आतंकवाद का माध्यम) :-

- T. के प्रसार के लिए अत्याधुनिक हथियारों का इस्तेमाल जैसे :- AK-47, AK-56, जैविक हथियार (एन्थ्रेक्स)
- सूचना एवं संचार तकनीकों का स्मार्ट रूप में प्रयोग करना, eg :- कम्प्यूटर, नेट, मोबाइल इत्यादि
- शिक्षण- प्रशिक्षण तथा व्यवहारकुशल होकर स्थानिय लोगों में घुल- मिल जाना व सुविधानुसार विस्फोट करना।
- भय दोहन करना, अपहरण के माध्यम से फिरौती वसूलना एवं अन्य लक्ष्य हासिल करना तथा मादक पदार्थों की तस्करी से धन की प्राप्ति।
- आतंकवादी गति० को जाँच या खुफिया एजेंसियों के संदेह के दायरे से बाहर निकालने और रणनीति सफल बनाने हेतु अति सामान्य तरिकों का इस्तेमाल करना जैसे सायकिल, प्रेशर कुकर बम, मानव बम etc.

समाधान का तरीका

-> त्रिआयामी रणनीति अपनाने की जरूरत है।

1) आ. के आर्थिक ढाँचे पर प्रहार करना -> (from notice)

चार स्रोतों से आय - (1) धार्मिक अनुदान (2) संगठित अपराधियों + (3) मादक पदार्थों की तस्करी से (4) देश, जो किसी देश के शत्रुता रखते

जो आतंकियों को वित्तीय सहायता

UN प्रस्ताव - 1373
सामूहिक बहिष्कार

2) आतंकवाद एवं संगठित अपराध के बीच गठबंधन को तोड़ना।
- पालेर्मो कन्वेंशन को प्रभावी रूप से लागू करना।

(संगठित अपराध के विरुद्ध UN का संधि पत्र)

- इसे Nov., 2000 में अपनाया गया व 29 Sep, 2003 से यह लागू है। भारत द्वारा इस पर Dec, 2002 में हस्ताक्षर किया गया। किंतु संसदीय स्वीकृति मई, 2011 में की गई।
प्रभाव :- इससे आ० एवं सं० अप० के बीच का गठबंधन टूटना या कमजोर होना।

3) घरेलू स्तर पर :-

(i) एकीकृत जाँच एजेंसी की आवश्यकता तथा T. के विरुद्ध संघीय कानून को बनाना।

के रूप में → NIA T. की जाँच
✓ NCTC

(ii) आतंकवाद के विरुद्ध एक कठोर दृष्टिकोण अपनाने तथा आतंकित गतिविधियों से संबंधित मामलों के त्वरित निष्पादन की जरूरत है।

(iii) ______ आतंकी संगठनों से गठन वार्ता को प्रोत्साहन तथा बेहतर पुनर्वास नीति की आवश्यकता, जिससे "साइको - रिहेबिलिटेशन" का प्राव० हो।

(iv)

जातिवाद एवं जाति संघर्ष ← नृजातीय संघर्ष

1960 ← शताब्दी

यजमानी system (प्रत्येक जाति के कर्तव्य निर्धारित) ⇓ आपसी निर्भरता

से पहले (जातिगत) नहीं (रहा)

Democratic values का प्रसार हुआ → expectation ↑

रोजगार के अवसर

यजमानी प्रथा टूटी

→ जाति संघर्ष

⇒ After 1990 ई०

- आर्थिक - प्रशासनिक हित से जुड़ा
- पिछड़ों को अवसर

जाति संघर्ष

पुराने अधिकार संपन्न ← → नये अधिकार प्राप्त लोग

→ संघर्ष ←

समाज का विभाजन

सामान्य ← → वंचित

वंचित ⇓ आ०, सा० पुनरुत्थान हेतु आरक्षण ⇓ आपस में विघटन

दलित → महादलित

संस्कृतिकरण ⇒ जाति के ऊँचा उठाने की प्रक्रिया ↑

अखिल भारतीय जातियों का ब्राह्मण समाज संगठित रूप

- सामूहिक प्रतिमान → ज्यादा चेतना ↑ ⇒ Conflict ↑
-

जातिवाद / संघर्ष का कारण :

जातिसूचक शब्द service को रोका जाए

- जाति के प्रति भावनात्मक लगाव

मनोवैज्ञानिक लगाव के कारण जातिगत चेतना में वृद्धि

- यजमानी प्रथा का टूटना : इससे विभिन्न जातियों की परस्पर निर्भरता समाप्त हुई व अपने जातीय हितों को सर्वोपरि बनाये रखने का विचार विकसित होना। इसी से कालांतर में जाति संगठनों का विकास हुआ। जिसने जातिवादी चेतना को और ज्यादा बढ़ाया।

- आरक्षण की नीति : जिससे जातिगत चेतना में वृद्धि के अतिरिक्त राजनीतिक प्रणाली को भी जातिगत आधार पर पुनर्गठित कर दिया।

- जातीय संगठनों का विकास होना, जिनका aim जाति को संगठित करना, प्रभाव बढ़ाना, दबाव समूह के रूप में कार्य करना आदि था। (blog of या

- यातायात एवं संचार साधनों का विकास होना, जिसने विभिन्न क्षेत्रों की एक ही जाति के बीच संपर्क को बढ़ा दिया। इससे अखिल भारतीय स्तर के जाति संगठनों का विकास संभव हो सका।

M.N. श्रीनिवास

- संस्कृतिकरण तथा उच्च जातियों द्वारा अपना प्रभाव बनाये रखने हेतु इसका विरोध किया जाना।

निम्न जाति के उच्च जाति के कर्मकाण्डों / रिवाजों को अपनाकर अपने को उच्च बताना

- विसंस्कृतिकरण की प्रक्रिया 1970-80 में अनुसूचित

अंतर्जातीय विवाह (आर्थिक लाभ)

- राजनीतिक कारण : इसने सम्पूर्ण चुनावी समीकरण को जाति के आधार पर ...

उपरोक्त सभी कारणों से जातिगत संघर्ष देखे गये, क्योंकि अब मुख्यत: पिछड़े वर्ग व दलितों जातियों के प्रति व स्वयं इन जातियों के अंतर्गत भी दिखता है। इसने अनेक समस्याएं उत्पन्न की, जैसे भेदभाव, हिंसा, जातिय संघर्ष, प्रजातंत्र विरोधी परिस्थिति तथा एक नये रूप में जातिवाद को उत्पन्न करना।

क्षेत्रिय अध्ययन एवं उनके निष्कर्ष shows कि भविष्य में जातिगत संघर्षों की तीव्रता व मात्रा में वृद्दि होगी। प्राय: हिंसक जातिगत संघर्ष, कानून एवं व्यवस्था को बिगाड़कर आंतरिक सुरक्षा पर गंभीर चुनौति उत्पन्न कर सकता है, तथा इस संघर्ष को बढ़ाने में विदेशी स्टेट एवं नॉन स्टेट एक्टर की भूमिका भी भविष्य में दिख सकती है।

समाधान के उपाय :->

- जाति संगठनों का कठोरता के साथ निरोध करना, विशेष रूप से जातिगत चेतना व तनाव फैलाने के तरीकों पर प्रहार होना चाहिए। इस संदर्भ में न्यायपालिका ने पहल करते हुए, जाति संगठनों के सम्मे० को प्रतिबंधित करने का निर्णय दिया है।
- इसके अतिरिक्त उन्हीं शैक्षणिक संस्थानों को सरकारी अनुदान दिया जाना चाहिए, जो जाति आधारित ना हो।
- मु० रूप से पिछड़ी जातियों में शिक्षा का प्रसार तथा उनके जीवन स्तर में मु० सम्पन्नता को बढ़ाना और उच्च वर्गों द्वारा उनके शोषण को रोकने का प्रयास।

- जाति उपनामों को लिखने की प्रथा का बहिष्कार किया जाना चाहिए।

- जातिवाद के विरोध में जनमत का एकत्रीकरण - इसके लिए शैक्षणिक संस्थाओं, समाजसेवी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों एवं साम्प्रदायिकता विरोधी संगठनों की मदद ली जा सकती है।

- शिक्षा में व्यापक प्रसार करना तथा शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर उन मूल्यों एवं मान्यताओं का महत्व प्रदान करना। जिनसे जातिवाद जैसी संकीर्ण मानसिकता का ह्रास हो सके।

- सार्वजनिक नियुक्तियों में जाति आधारित आरक्षण पद्धति का उन्मूलन करना तथा आ० आधार पर पिछड़ेपन का निर्धारण करना। इसके लिए दृढ़ राज० इच्छा शक्ति की आवश्यकता है।

- जाति आधारित निर्वाचन क्षेत्रों का उन्मूलन करना तथा मंत्रीमण्डल के गठन में भी स्वस्थ सिद्धांत का आधार बनाना जैसी योग्यता, कार्यकुशलता, चारित्रिक निष्ठा इत्यादि।

- अंतर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देना, व इसकी सा० स्वीकृति दिलाने का कार्य करना।

- स्वयं जातिवाद को ही समाप्त करने के लिए आ० आधार पर समाज का पुनर्गठन करना।

नृजातीय संघर्ष (आंतरिक सुरक्षा पर खतरा)

Ethnic
→ जिनकी सांस्कृतिक स्तर पर पहचान ना हो सके
↓
रीति, आचरण, व्यवहार या भाषा के स्तर पर पहचान का संकट उत्पन्न होने की स्थिति में यह

प्रजाति (Race)
↓
जीव वैज्ञानिक अवधारणा का भाव
↓
यह तो भावना या बहुत कम या अनुपस्थिति
↓
संघर्ष कम / अनुपस्थित

नृजातिय संघर्ष की उपस्थिति :—

1. आर्य vs द्रविड़ संघर्ष
2. N.E. के राज्यों में
   → लगभग सभी जनजातियां एक ही प्रजाति की
   → मंगोलायड
   → ये सभी नृजातिय समूह का रूप धारण किये हुए हैं।
   → संघर्ष
      - स्वायत्त क्षेत्रों / राज्यों की मांग के लिए
      - पृथक एवं संप्रभु की मांग
      ↓
      हिंसक संघर्ष
      ॥
      आंतरिक सु० पर

③ भूमिपुत्र की अवधारणा के रूप में

↳ प्राय: भारत में क्षेत्रीय स्वरूप का रूप धारण कर लेती है, यह अवधारणा।

④ विसंस्कृतीकरण तथा इसके द्वारा अवसरों को प्राप्त करने का प्रयास →

↳ गुर्जर - मीणा संघर्ष

⑤ साम्प्रदायिक संघर्ष के रूप में भी नृजातीय संघर्ष

संस्कृति
↳ धर्म
↳ भाषा
↳ रीति
↳ वस्त्र
↳ भोजन

सिर्फ एक पक्ष को राजनीतिक उद्देश्य से धार्मिक आधार पर समाज का सामूहीकरण
⇓
सम्प्रदाय (sect)

इस स्थिति में धर्म असहिष्णु आचरण पर आधारित

समाधान के लिए किये गये प्रयास है →

① 1962 में राष्ट्रीय एकीकरण परिषद (Integration) — 1980, 84 पुनः यह परिषद पुनर्गठित हुई।

उद्देश्य :- जातिगत, साम्प्रदायिक, क्षेत्रवाद से संबंधित संघर्ष को रोकना।

② 1968 में प्रत्येक प्रकार के संघर्ष के समाधान हेतु विशिष्ट कार्यबल का गठन।

③ 1990 के दशक में राष्ट्रीय एकी० परिषद का गठन

इसके क्षेत्रीय अध्ययनों के आधार नृ० सं० के मौलिक कारणों को परिभाषित करने व चिन्हित करने का प्रयास हुआ, लेकिन जातिवाद, सम्प्रदायवाद या क्षेत्रवाद के आधार पर हिंसक संघर्ष जैसी ज्वलंत समस्या का पूर्णतः समाधान नहीं हो सका है। इन संघर्षों की उपस्थिति और अनेक अवसरों पर इनके हिंसक होने के कारण रा० सुरक्षा और I. S. पर संकट उत्पन्न होता है।

-> २008-09 के बाद के क्षेत्रीय अध्ययन दर्शाते हैं कि शिक्षा के प्रसार के कारण लोगों में अनावश्यक साम्प्रदायिक संघर्ष की प्रवृत्ति घटी है, यह एक अच्छा संकेत है, और इसे अधिकाधिक रूप से प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

जनजातीय संघर्षों को समाप्त करने के प्रयास :-

1) अनेक संवैधानिक प्रावधान किये गये हैं

A 15(4), 16, 46, २44(1), 339 → (प्रशासन में संघीय नियंत्रण) का प्राव०

२) विधान मण्डलों एवं नागरिक सेवाओं में आरक्षण का प्राव०

3) जनजातियों की भाषाई, सांस्कृतिक पहचान के उन्मूलन के बगैर उनका सामाजिक उन्नयन एवं राष्ट्रीय मुख्य धारा में सम्मिलन।

4) Tribal research Insti (T R I) की स्थापना।

असम, आंध्रप्रदेश, प० बंगाल आदि में स्थापना हुई।

5) जनजातियों के रीति - रिवाज एवं कानूनों का संहिता बद्धि साहित्य का प्रकाशन।

(6) [illegible] का गठन —

जो कि जनजाति कल्याण से संबंधित कार्यों के विषय में परामर्श देती है। यह परिषद् T के पूर्णतः अथवा भागतः उपस्थिति वाले सभी राज्यों में गठित है।

- ट्राइफेड → इसका aim T के विशिष्ट उत्पादों जैसे - शहद, रस्सी, बेंत, जूट, लकड़ी के शिल्प आदि के विनिर्माण को प्रोत्साहित करना है।
- T. के क्षेत्रीय संसा० पर उनका नियंत्रण
- नई खनन नीति, 2011 को लागू करना।

उपरोक्त सभी प्राव० के बावजूद T. A. की समस्याएँ बनी हुई हैं, और ये समस्याएं उनके संघर्षों को बढ़ावा देती हैं, जो कि आंतरिक S. की दृष्टि से हानिकारक है। इनकी समस्याओं का प्रधान कारण T विकास की नीतियों का अभिजन केन्द्रित होना है। इसलिए संघर्षों के स्थायी समाधान हेतु इन नीतियों को वंचित वर्ग केन्द्रित बनाने की आवश्यकता है।

संगठित अपराध की समस्या

अपराध –

- वो सभी कार्य अपराध में आते हैं, जिनसे कानूनों का उल्लंघन होता है।

न सभी तत्वों
ा दिखना –
पराध

- अपराध करने का इरादा – नीयत में दोष के कारण।
- बाह्य क्रिया ः कानूनों के उल्लंघन का ~~क्रियान्~~ दिखना।
- उल्लंघन की स्थिति में राज्य द्वारा दण्ड का प्राव.

संगठित अपराध ः

संगठित अपराध ः→

- वह अपराध, जो संगठन बनाकर योजनाबद्ध तरीके से किया गया हो।
- संगठन की उपस्थिति
- पर्याप्त श्रम शक्ति की उपस्थिति, जो प्रशिक्षित प्रकार की हो।
- विशिष्ट उद्देश्य – योजनाबद्ध
- अनेक आपराधिक कृत्यों पर आधारित होगा, जिनमें परस्पर संबद्धता (उदा॰ ः अपहरण, वसूली, मादक पदार्थों की तस्करी, अवैध हथियारों का व्यापार)
- राजनीतिक – प्रशासनिक संरचना से संबद्ध होना

D Indirect

- क्षेत्रीय विस्तार की दृष्टि से एक देश के अनेक क्षेत्रों में यह व्याप्त हो सकता है, या अनेक देश

तक कैसे संगठित अपराध संगठनों की पहुँच हो सकती है।

- व्यापक नेटवर्क और इसमें प्रतिबद्ध लोगों की उपस्थिति भी दिख सकती है।

⇒ भारत की I. S. पर इससे खतरा क्यों —

- भारत के रा० जीवन में विभिन्न मतभेदों की उपस्थिति होना। - ये ~~मतभे~~ मतभेद आ०, सा०, क्षेत्रीय, नृजातीय, जातिगत, साम्प्रदायिक इत्यादि प्रकार के हैं अपराधियों द्वारा मतभेदों को भुनाने का प्रयास होता है, जो कि I. S. की दृष्टि से खतरनाक है।
- अनेक क्षेत्रों में नृ० सं० एवं अलगाववादी Move. चलते रहते हैं, और इन Move. का आपराधिक संगठनों से जुड़ाव भी एक imp. समस्या है।
- भारत में शिक्षित बेरोजगारों की बड़ी सं० उपस्थित है जिन्हें प्रशिक्षित करके सं० अप० के योग्य बनाया जा सकता है, अर्थात् इसके लिए S. आधार की उपस्थिति।
- पड़ोसी C. के साथ भारत का मधुर संबंध न होना, ∴ विभिन्न पड़ोसियों द्वारा आपराधिक संगठनों को आर्थिक व प्रशिक्षण, अस्त्र - शस्त्रों etc का सहयोग किया जाता है।
- विकासशील C. होने के कारण भारत के पास I. S. पर खर्च हेतु सीमित आ० स्रोत हैं, जबकि आ० संग० के पास पर्याप्त वित्त की उपलब्धता है।
- राजनीति के अपराधीकरण और अप० के राजनीति०

समस्या के कारण संगठित अपराधियों और राजनीतिज्ञों के बीच ... विकसित करने की संभावना।

- राजनीतिक-प्रशासनिक जीवन में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार इससे सीमा पार के आपराधिक संगठनों एवं राजनीतिक दलों के बीच गठबंधन विकसित होने की संभावना।

- भारत का गोल्डेन त्रिकोण तथा गोल्डन क्रिसेण्ट के पैसेज में स्थित होना, जबकि ये संगठित अपराध हेतु वित्तीय स्रोत का कार्य करते हैं।

Golden triangle
थाईलैण्ड → कम्बोडिया
म्यानमार ↔

मादक द्रव्यों के माफियाओं के द्वारा भारत के अलगाववादी गुटों को आर्थिक सहायता दी जाती है, तथा ISI के साथ ऐसे माफियाओं का संबंध भी दिखा है, और ISI द्वारा ड्रग माफियों के भारत में घुसपैठ की कोशिश कराई जाती है।

Golden Crescent ईरान ⟷ अफगा.
↘ पाकि. ↙

समाधान का तरीका :-

कूटनीतिक प्रयास :- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्राप्त करना

✓ पड़ोसियों के साथ संबंधों को बेहतर बनाना।

✓ UNCTOC (United Nation Convention on transnational Org. Crime) को प्रभावी रूप से लागू करना। यह संधि UNODC (United Nation official of drugs & crime) के क्षेत्राधिकार में है इसलिए इसके लागू होने से संग. अप. और मादक पदार्थों तस्करी के बीच संबंध टूटेगा।

UNCTOC के पूरक के रूप में विशिष्ट क्षेत्र संबंधी तीन प्रोटोकॉल भी हैं —

1) व्यक्तियों (स्त्रियों व बच्चों) के अवैध व्यापार को रोकना ... प्रतिबंधों

5) हथियारों के अवैध व्यापार का मुकाबला करना।

→ UNCC (United Nation Convention on Corruption) को प्रभावशाली रूप से लागू करना। यह संधि दिस, 2005 से लागू है। भारत द्वारा इस पर 2005 में हस्ताक्षर किया गया और मई 2011 से इसे संसद की स्वीकृति भी मिल चुकी है। यह संधि भी UNODC के क्षेत्राधिकार में है। ∴ इससे सं० अप० व भ्रष्टाचार के बीच का गठबंधन भी टूटेगा।

- घरेलू प्रयास :- 1) संग० अप० पर ARC (Administration Reform Comission) की अनुशंसाओं को प्रभावी रूप से लागू करना।

2) रोजगार सृजन को शत प्रतिशत विकास की प्राथमिकता देकर बेरोजगारी की दर घटाना।

3) राष्ट्रीय जीवन के सभी मतभेदों को दूर करने के लिए ईमानदार प्रयास करने उन्हें प्राथमिकता सूची में रखने की जरूरत है।

सीमावर्ती क्षेत्रों में अशांति की समस्या

J&K — N.E. States

why अशांति
bcoz
→ परिस्थिति
→ भा० सर० की गलत नीति
→ राजनीति से मोहभंग

समस्यायें
→ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य → (i) विशिष्ट संवैधानिक स्थिति
⇓ (A-370)
. धोखा → सामान्य स्थिति होने का विलय.
⇒ UNO में मामला गया
Problem ↑ ⇒ bcoz UNO के

विवादास्पद हस्तक्षेप के कारण समस्या का अंतिम०

(दोनों अपनी सेना पीछे हटायें
⇓
फिर जनमत संग्रह से समस्या का समाधान)

भारत का पक्ष → विलय पत्र पर हस्ताक्षर
पाक. ⇓ सेना नहीं हटायेंगे

∴ भारत ने नहीं
P. को सेना पीछे हटानी चाहिए
⇓
नेहरू ने भागे जनमत संग्रह का प्रस्ताव स्वीकार
⇓
शिमला समझौता (इंदिरा + भुट्टो)
→ द्विपक्षीय मुद्दा बनाया
⇓
तीसरे पक्ष को स्वीकार नहीं.

मार्च, 2003
मांगी मन्नान ⇒ भारत हमेशा से तीसरे पक्ष
⇓
J&K पर UNO के जनमत संग्रह को
चार्टर लागू ..... bcoz शिमला के
ऐसे दोनों ..... जनमत कि Bypass करना

पाक० की रणनीति में परिवर्तन — दहशत ७० का सहारा

- I.S. की दृष्टि से निर्णायक बिन्दु रहा
  - कश्मीर
  - पंजाब
  - N.E.
  में अराजकता के Back. हस्तक्षेप

- पाक एवं ISI द्वारा विभिन्न आतंकी गुटों एवं अलगाववादी गुटों को सक्रिय समर्थन दिया जाना → I.S. Prob.

(iii) J&K को लेकर I व पाक० का विरोधी दृष्टि
- J&K भारत का अभिन्न अंग
- J&K के संविधान द्वारा समर्थन ⇐ (A-1 स्पष्टतः कहता है कि यह I का अभिन्न अंग है व इसमें कोई संशोधन संभव नहीं है।)
- → J&K के भारत में विलय को स्वीकार नहीं करता है।

कुछ लोगों ने 370 में संशो० की मांग — why → बाहर के लोगों को J&K में बसने दें। जनांकिकी को बदलें

↓ NDA द्वारा बात

but संविधान विशेषज्ञों/SC की राय → A-370 का संशोधन संभव नहीं

ऐतिहासिक जटिलता के कारण होगा।

Union के साथ जुड़ाव ⇒

जनसंख्या ⇓ संस्कृति गठित ⇓ राष्ट्र की अनुरक्षता ⇓ Thr.

(भाग-1) C-S के संबंधों को परिभाषित करने की समस्या

⇒ समय के साथ संबंधों में जटिलीकरण

↓

सुधार की जरूरत

↓

सुधार हेतु दृष्टिकोण विकसित

I) जन इच्छा का प्रतिनिधित्व करना है

↓

तर्क → J&K के विषय में कोई भी निर्णय लोगों की इच्छा से लिया जाना चाहिए।

↓

स्वायत्तता की माँग किया जाना

but स्वा. की मात्रा व स्वरूप के स्तर पर केंद्र के दृष्टिकोण से भिन्नता रखती है।

C

सब कुछ के अतिरिक्त J&K हेतु जितनी स्वायत्तता दी है, वह पर्याप्त।

S

स्वायत्तता 1953 के पहले की स्थिति होनी चाहिए।

[illegible] J&K पर संघ सूची के सभी विषयों [illegible]
[illegible] विस्तारित किया गया।

[illegible] 1953 तक केवल तीन विषयों पर संघ का नियंत्रण
रक्षा संचार वि० नीति

- 1958 में J&K में अखिल भारतीय सेवा का विस्तार किया गया।
- 1959 में SC को अंतिम न्यायाधिकार मानने का प्रबंध लागू होना।
- 1961 में रा० चुनाव आयोग की अधिकारिता का विस्तार किया गया।
- 1965 में राष्ट्रपति शासन लागू करने का प्राव०

1965 - 74 ⇒ मन्यवस्था
राजीव गाँधी — फारूख समझौता (1985)
↳ परिस्थिति शांत करने हेतु चुनाव
↓
धांधली
↓
आम लोगों का राज० प्रक्रिया से मोहभंग
↓
इससे समस्या का समाधान नहीं
↓
JKLF ⇒ समस्या समाधान का रास्ता only in संघर्ष

→ उपरोक्त सभी गति० के बाद राजीव - फा० समझौता के अंतर्गत 1986 में हुए विधानसभा चुनाव ने

लोगों की राज० व्यवस्था की भागीदारी सीमित की। इसी पृष्ठभूमि में एक दूसरे दृष्टिकोण का विकास हुआ। जिसमें समस्या समाधान हेतु सशस्त्र संघर्ष को एक मात्र विकल्प माना गया। इस हेतु J K लिबरेशन फ्रंट

- not religious
- only favours autonomy which existed before 1953

पाक के सहयोग एवं समर्थन से परिस्थिति गंभीर

⇓

J&K में तनाव ↑

⇓

सशस्त्र संघर्ष की शुरुआत व पाक० ने इसे → स्वतंत्रता संघर्ष कहा

- धार्मिक आधार पर support
- मुजाहिदीन लड़ाकुओं का Infiltration

III) J&K के संदर्भ में दोहरी नीति अपनाया जाना —

① धर्म निरपेक्ष + समावेशी विकास की नीति

② विशिष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखने की नीति

⇓

दोनों P० में विरोधाभास होना

- प्रभाव
- पाक कर रहे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच
- fragile स्थिति से I.S. पर खतरा

(IV) :- आतंकी गति० के संदर्भ में हरम में गल नीतियों का क्रियान्वयन होना :-

सॉफ्ट स्टेट की छवि प्रस्तुत करना → (Ex:- रूबैया मई अपहरण)

J.S. हेतु turning point

तीन प्रभाव

आतंकियों का मनोबल ↑ (Ex:- इंडियन एयरलाइंस का अपहरण)
⇓
आतंकी गुटों के साथ वार्ता की नीति को चलाने हेतु संघर्ष विराम (सरकार, वार्ता, आतंकी)
⇓
casualty ↑
⇓
संघर्ष विराम की नीति को वापस लिया।

बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप ↑
⇓
J&K के आतंकी गुटों का International Islamic front से संबंध स्थापित हो गया।
⇓
(गठन by ओसामा (1988), now ⇒ यह अलकायदा कहलाता है)
⇓
J&K के आतंकवाद का अंतर्राष्ट्रीयकरण होना

सुरक्षा बलों का मनोबल
⇓
bcoz यह अस्थ... उत्पन्न ... लोगों ... परवाह ... करते ... आतंक... विरुप... but ... सरका... इन्हें ... छोड़ ... देती ... ⇓

2000 - संघर्ष वि... समझौता ने ... इसे और बढ़ा...

⇒ 2001 में हालात कि in ... c. आतंकी

तो UNSC action
↓
रणनीति बदली
↓
अफगानी समूह विकसित ⇒ मुजाहिदीन आतंकियों को सीमा पार से भेजा गया।

V) पाक० द्वारा विदेशी मुजाहिदीन के प्रवेश कराये जाने से व्या० आतंकवाद की स्थिति उत्पन्न होना है

↓

क्षेत्रीय समस्या को व्या० मुद्दे के रूप में रूपांतरण
↓
यह संदेश देने का प्रयास कि J&K का संघर्ष हिन्दू एवं मुस्लिमों के बीच का संघर्ष है।
↓
aim → साम्प्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ने का प्रयास
(किश्तवाड़ में शुरुआत)
↓
अन्य क्षेत्रों में प्रसार (Out of J&K)
↓
aim है भारत की धर्म निरपेक्ष छवि को धूमिल करना

main aim - J&K के जनता की सहानुभूति प्राप्त करना।

तरीका — धार्मिक स्थल पर प्रायोजित, किसी विशिष्ट त्योहार पर आयोजित

आंतरिक सुरक्षा संबंधित समस्या के समाधान

1. केंद्र सरकार द्वारा त्रिस्तरीय नीति का पालन –

A) आतंकी गतिविधियों को रोकने, अलगाववादी समूहों को दबाने तथा सीमा पार घुसपैठ पर अंकुश लगाने के लिए सुरक्षा बलों की पर्याप्त संख्या में तैनाती। इसके अतिरिक्त इसके अंतर्गत और भी कदम उठाये गये –

(i) Armed forces (J&K Special power Act, 1990) को लागू किया जाना।

पहली बार started in असम, मणिपुर, विवादित 1990 में J&K

अफस्पा का (+)

- क्षेत्रों को अशांत घोषित
- सुरक्षा बलों को अधिकार → सर्च, सीज → arrest power
- इन अधिकारों पर कोई सीमा नहीं
- और उत्तरदायित्व नहीं

इस Act द्वारा कुछ क्षेत्रों को अशांत क्षेत्र घोषित कर वहाँ खोज एवं गिरफ्तारी की विशेष शक्तियाँ सुरक्षा बलों को प्रदान की गयी।

(ii) दो एकीकृत हेडक्वार्टर (जम्मू एवं लद्दाख डिविजन) का गठन करना

→ Counter Insurgency ऑपरेशन

कोर ग्रुप का गठन है जिसमें डी. पुलिस, BSF, CRPF, ITBP, IB etc के सर्वोच्च अधिकारियों की नियुक्ति।

(iii) विशेष समूह का गठन किया जाना है
कार्य → घुसपैठ रोकने एवं उग्रपंथियों / आतंकियों को खदेड़ने की रणनीति का परीक्षण करेगा।

(iv) district Armed Reserved की चार कम्पनियों (DAR) का गठन करना।

सरेण्डर करने वाले लोग इसमें सम्मिलित

(v) खुफिया तंत्र को मजबूत करने हेतु जासूसी उपग्रह का प्रक्षेपण तथा इसके संकेतों के विश्लेषण हेतु DIPAC (Defence related Image Processing Application Centre) का गठन भी किया गया है। जिसमें सुरक्षा विशेषज्ञ + आईटी एक्सपर्ट + इनक्रिप्शन एक्सपर्ट etc सम्मिलित हैं।

(कूट भाषा संकेत)

(−) मौसम खराब होने पर समस्या
Dense forest में ,, ⇒ (नक्सलवाद को identify करने में आवश्यक भी)
(+) — उपग्रह विकसित

(vi) सुरक्षा F. व स्थानीय पु. के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना।

(B) राज्य के आर्थिक विकास को त्वरित करना :-
Refer to notice

केन्द्रीय सहायता

सामान्य विकास
- बस सेवा शुरू
- सीमा पार व्यापार ↑
- रोजगार निर्माण
- प्रतिवर्ष 8000 रोजगार सृजन → by केन्द्र की
- पुनर्वास

विशेष खर्चों की पूर्ति का प्रावधान (no audit, no जवाबदेही)
⇓
for सुरक्षा बल

(C) सभी आतंकी एवं उग्रपंथी गुटों के साथ बातचीत का विकल्प खुला रखना तथा समर्पण करने वाले उग्रपंथियों का पुनर्वास :→

militant को screened ⇒ DAR में recruit → bcoz आतंकी रणनीतियों से परिचित

(ऐसे ... के ... वार्ता ... बातचीत)

सुझाव :→

- J&K के समाधान हेतु वहाँ के लोगों की इच्छाएं को समझने एवं उनकी इच्छा अनुरूप संविधान के दायरे में रखकर एक यथार्थवादी रणनीति अपनाने की आवश्यकता क्योंकि किसी भी लोकतंत्र में जन इच्छा को लम्बे समय तक नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।
- विकास संबंधी कार्यों को धरातल पर उतारने की आवश्यकता है, अर्थात् आंकड़ों के आधार पर विकास को समझने की बजाय यथार्थवादी दृष्टिकोण से

- Pak के संदर्भ में दोहरी रणनीति अपनाई जानी चाहिए। अर्थात् एक तरफ कूटनीतिक तरीकों से उस पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव बनाना तथा Pak के साथ शांति प्रक्रिया की गति को तीव्र करके वहाँ एक मजबूत व स्थिर सरकार का गठन करवाना।

directly involve नहीं हो सकता है - bcoz of UNSC का member

N.E. राज्यों में अशांति

कारण :-

ऐतिहासिक संघर्ष या परिप्रेक्ष्य :- भारत संघ में उ. पूर्वी राज्यों के विलयों को असंविधानिक या गैर कानूनी मानना।

⇓

bcoz → (1) ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से भारत के अंग नहीं

→ बर्मा द्वारा अंग्रेजो को दिया (1826 की संधि)

⇓

1935 के एक्ट में बर्मा को भारत से अलग तो N.E को भी भारत से अलग होना चाहिए था।

⇓

नागालैण्ड में अलगाववाद की उत्पत्ति जन्म

नागा मुक्त जिला / नागा लोगों को मिला एक अलग S. बनाया जाए

NSCN

⇓

गैर नागालैण्ड

(2) संविधान में भी N.E. S. के साथ न्याय नहीं → संवि. की 8वी अनु. में भाषाओं को स्थान नहीं

⇓

धारणा बनी, कि हम भाषा के आधार पर अलग।

Started

NSCN मुइवा गुट — NSCN खपलांग

दोनों के बेस नागालैण्ड का निवासी नहीं

∴ → स्थानीय लोगों का support नहीं

→ भाग हेतु कोई बड़ा base नहीं

* नेपाल friendly देशों के support

चीन, म्यान, बांग्ला॰ भूटान को → 2003 → रॉयल डू-मार्गी द्वारा ध्वस्त

का Indirect support

(ii) भौगोलिक परिस्थितियाँ (i) कुल क्षेत्रफल 2 लाख 55 हजार वर्ग कि॰मी॰ है, लेकिन शेष भारत के साथ इनका जुड़ाव केवल 20 km की एक पट्टी के द्वारा। अधिकतम चौड़ाई 60 k.

a) connectivity

परिवहन सुविधा सीमित → no railway track, → One way

⇓

∴ विशेष लगाव नहीं

b) इन S॰ में पर्वत, मैदान, पठार की उपस्थिति के कारण इनकी भौगोलिक दशा भी एक समान नहीं होना (Physiography) →

⇓

इन्हीं ऐति॰ एवं भौगो॰ परि॰ में ही यहाँ insurgency की समस्या निहित है,

(iii) शेष भारत के साथ सांस्कृतिक लगाव नहीं होना तथा स्वयं इन S॰ के बीच भी सांस्कृतिक भिन्नता की उपस्थिति होना, अर्थात् इन क्षेत्रों की Insurgency के कारणों में ~~आस्थाओं~~, स्वरूप एवं (सामाजिक भिन्नता, समाज के बीच ...imation) Social chemistry भिन्नता होना।

reservation (मणिपुर without territorial limit है के नागाओं को स्वीकारा जायेगा ⟹ प्रतिक्रिया मणिपुरा में insurgency पुनः प्रारंभ)

→ outsider का आगमन → औपनिवेशिक शासन के समय (बागवानी) / → बांग्लादेश प्रवासी

no जॉब available ⇓

बाहरी की food habit different → संस्कृति खतरे में है

⇓ resources पर दबाव

→ आपसी संघर्षरत (आंतरिक) ↳ नृजातिय संघर्ष

4) → सम्पूर्ण N.E.S. का अंतर्राष्ट्रीय सीमा से जुड़ाव होना → विशेषतः 4 देश → भूटान, बांग्लादेश, चीन, म्यानमार → नागा / → open area

(training लॉजिस्टिक support)

2003 में रॉयल भू. सेना द्वारा अभियान चलाया गया → ∴ no support in भूटान but बाकि 3 में लॉजिस्टिक सहायता

इन सीमावर्ती C. में से कुछ देश विशेषकर चीन व म्यांमार नेटो ट्रेनरी है, ∴ यहां से अलगाववादी m. को D-Ind. समर्थन मिलता है। अर्थात यहां के आतंकी व अलगाववादी गुटों को अस्त्र-शस्त्र प्रशिक्षण व आश्रय इन देशों में उपलब्ध है।

5) अवैध घुसपैठ की समस्या : N.E.S. में 2015T

जिनके द्वारा 257 भाषाओं व बोलियों का व्यवहार किया जाता है। ∴ इसमें भाषायी एवं नृजातीय विविधता अधिक है। स्वतंत्रता के बाद यहाँ बड़ी संख्या में गैर-T आबादी का आगमन हुआ। इसने भाषायी एवं खान-पान के स्तर पर असमानता उत्पन्न करके विविध प्रकार से असंतोष उत्पन्न किया।

(6) अवैध प्रवास :- मूलत: बांग्ला० के चकमा शरणार्थियों के कारण है। (चूँकि बांग्ला० से सीमा खुली + विभाजन के बाद दोयम दर्जे, गरीबी, अल्पविकास)

⇓

Prob — becoz → वोटर I. d. प्राप्त है ⇒ ∴ P. प्रक्रिया में इनकी निर्णायक भूमिका हो जाती है।

⇓

संख्या alarming स्तर पर पहुँच चुकी है।

(प्रवास प्रभाव ⇓ बांग्ला० से बात ⇒ वापस बांग्ला० भेजा जाए)

(7) सांस्कृतिक आत्मसात, भाषा एवं बोली की समस्या :- (मैथा, मकणा, नागा आदि की भाषा → आठवीं अनु० में नहीं) } they thinks रीति-रिवाजों, भाषा को सरकारी स्तर पर समर्थन नहीं

(राजनीतिक महत्व का अभाव)

Govt. ← Govt. ← Govt. (भौगोलिक)

⇓

(~~भूआव है र भाषा~~)

भौगोलिक कारणों से शेष भारत के साथ यातायात विकास की समस्या ने उ० पू० S. के लोगों में P. अलगाव का भाव विकसित किया। वहाँ के लोगों की गतिशीलता में कमी आने के कारण यह अलगाववादी भाव बना रहा। इसके अतिरिक्त भाषायी स्तर पर भी इनमें अलगाववादी चेतना बनी रही। b'coz N.E.S. की अधिकांश भाषाओं के साथ दोहरा व्यवहार दिखता है। अधिकांश भाषाएं 8वीं अनु० में शामिल नहीं है।

नाहि वहाँ की शब्दावलियों को हिंदी एवं अन्य भाषाओं से समान जोड़ने की कोशिश की गई है।

D-Company 8) International Crime Syndicate की नकारात्मक भूमिका :- ⇓ (वित्तीय लाभ हेतु नशीले पदार्थों का trade)
⇓
(तस्करी में Insurgent group का use
⇓
bcoz of उपलब्ध Network

इसने N.E.S. में जहाँ एक तरफ अलगाव० सं० को आ० रूप से मजबूत बनाया है, वहीं दूसरी तरफ नशीले पदार्थों के अवैध व्या० के कारण N.E.S. की एक बड़ी pop. को इसके दुष्प्रभाव में भी लाया है।

नागालैण्ड :-

Insurgency सबसे पुरानी है।
⇓
अन्य क्षेत्रों के Insurgent group हेतु प्रेरणा का काम

इनकी प्रमुख माँग है - वृहद नागालैण्ड का गठन।
सभी ना० बाहुल्य क्षेत्रों को एकी० करके
अरुणा० → असम → मणिपुर → म्यान्मार

tribal conflict same in म्यानमार & N.E.S. ⇒ ∴ आपसी सपोर्ट

→ वृहद नागा० की माँग 1980 में उस समय की गयी, जब NSCN का गठन हुआ।
(National Socialist Council of Nagaland)
(1988) ↙ ↘
NSCN (IM) — मणिपुर का निवासी (इसाक मोरवा)
NSCN (K) (खेपलांग) → म्यानमार का निवासी

-~~[illegible]~~ किन्तु NSCN के I.M. को स्थानीय व्यापक समर्थन नहीं मिल सका bcoz स्थानीय लोगों के दृष्टिकोण से यह बाहरी लोगों का Move है। 1997 के बाद G. N. की माँग को केवल भारत के नागा बहुमत वाले क्षेत्रों के संदर्भ में की गयी। नागा निवासियों का विस्तार अरुणाचल के 8 जिलों, असम - 4, मणिपुर के 4 D. तक है। इस G. N. के अंतर्गत एक लाख 20 हजार वर्ग किमी० का क्षेत्र शामिल होगा। जिसकी अनुमानित pop. लगभग 35 लाख होगी। लेकिन बाहरी नागा नेताओं हेतु एक भावनात्मक मुद्दा होने के कारण मणिपुर व असम में इस Move के विरुद्ध प्रतिक्रिया भी दिखती है।

भारत सरकार एवं NSCN (IM) गुट के बीच जून, 2001 में बैंकॉक में संघर्ष विराम समझौता हुआ। जिसमें विवादास्पद शब्द 'without territorial limit' को शामिल किया गया। इसने मणिपुर एवं असम में व्यापक असंतोष उत्पन्न कर दिया। (मैतेई इसका विरोध करते हैं, bcoz G. N. बनने पर उनकी रा० स्थिति में गिरावट ↓)

मैतेई

III, इनी
V
res benifit

संघ सर० के द्वारा NSCN (IM) के साथ हितकारी वार्ता हेतु मंत्री समूह का गठन किया गया है। दोनों के बीच वार्ता जारी है। 31 जुलाई, 2007 को अंतिम दौर की वार्ता के बाद संघर्ष वि० सम० का विस्तार अनन्त काल के लिए स्वीकार कर लिया है। लेकिन पिछले 6 वर्षों की प्रगति संतोषजनक नहीं रही है, ∴ इस समस्या का शीघ्र समाधान आवश्यक है)

असम की समस्या :-

(1) अनेक नृजातीय समूहों की उपस्थिति

(2) असम विधानसभा में सामान्य वर्ग के लोगों का प्रभुत्व होना। इससे नृजातीय समूहों एवं अन्य वर्गों में असंतोष

(सिर्फ कुछ लोग ही political Benefit ले रहे हैं।)

पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं होना
⇓
असंतोष

3) अतः इन्हें प्रतिनिधित्व देने हेतु अनेक क्षेत्रीय परिषद की स्थापना। जैसे :- बोडो, मिसिंग, राभा, Deuri, कार्बी etc. ⇒ but नई समस्या उत्पन्न परिषद के क्षेत्रों में ST's के लिए तो विकास होता है, but अन्य लोगों का वंचित रह जाना। जिसमें असमी, नेपाली, मुस्लिम इत्यादि सम्मिलित हैं। जबकि aim of क्षे० परि० social Integrity but इसने विभाजन को जन्म दिया।

Geography

4) मानसून की भूमिका :- (शुरुआत फरवरी के अंतिम सप्ताह तक till → Oct.)

जल जमाव

अधिक वर्षा के कारण अनेक क्षेत्रों में बाढ़ की समस्या ⇒ bcoz outlet < जल

हिमालय से छोटी-२ नदियों का निकलना ⇒ Connectivity में कमी ⇒ mobility ↓ ⇒ असंतोष ↑

5) विद्युत एवं ऊर्जा के अन्य स्रोतों की कमी :- इससे यहाँ विकास कार्य प्रभावित ⇒ बेरोजगारी का स्तर अधिक।

6) असमान शैक्षणिक स्तर :- → अपर असम में Literacy ↑
→ Lower " " " ↓

अधिकतम लाभ अहोम को
→ basically from thailand

7) परिवहन की सुविधा → रेल मार्ग one way
→ NH → 31C, 37
→ प० बंगाल के साथ संपर्क

अंत० व्यवस्था न

(8) घने जंगलों की समस्या :-

उग्रपंथियों / Insurgent हेतु सुरक्षा स्थल

जल जमाव (डेंगू, मलेरिया का प्रकोप) → महामारी

सुरक्षा बल के लोग ← महामारी

तथा मच्छरकारी

→ सुरक्षित क्षेत्रों में जाने की समस्या

(9) बॉर्डर खुला होना :- ∴ चकमा शरणार्थियों की समस्या भी गंभीर है। ⇒ Insurgent group का अन्य क्षेत्रों से सम्पर्क आसानी से बन जाता है। ⇒ अशांति

(10) इस्लामिक जिहाद की उपस्थिति :-

- > साम्प्रदायिक संघर्ष
- > अन्य समुदाय के प्रति घृणा
- > अन्य N.E.S. में इनका प्रभाव हो सकता है।

(11) → सीमा पार ड्रग व्यापार एवं संगठित अपराध के साथ संघर्ष संबद्ध

⇒ अभिव्यक्ति :-

(1) पहली बार असम आंदोलन (1979-85ई०)

aim विशिष्ट असम संस्कृति को बचाना।

समर्थ आंदोलन

∴ इसमें गैर-असमी भाषी लोगों के विरुद्ध हिंसा पर काबू AASU द्वारा → इसे समर्थन दिया (All Assam Student Union)

1985 में राजीव गांधी P.M → AASU से talk ⇒ उन्होंने Political ⇒ समझौते पर हस्ताक्षर ⇒ लेकिन 1985 में असम समझौता के बाद यह Movement थोड़े पल के लिए स्थगित हुआ। लेकिन 1990 के दशक में यह पुनः उभरा।

... में इसकी प्रमुख माँग रही। अवैध माइग्रेंटस को ~~बाहर निकालना~~, but लगातार शांति वार्ता की नीतियाँ अपनाये जाने के कारण यह M० प्रभावहीन हो गया। 2005 के बाद इसमें पुनः उभार दिखा, but वर्तमान में इसका स्वरूप केवल प्रतिरोधात्मक है।

(2) ULFA (यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम) ई—

अप्रैल, 1979 में यह गठित हुआ। इसके द्वारा असम को भारत का भाग नहीं माना जाता है। 1983 में NSCN के साथ संपर्क के कारण इसकी संघर्ष क्षमता में वृद्धि हुई। पाक की ISI व बांग्लादेश की DGFI के साथ संपर्कों के कारण इसका स्वरूप अधिक हिंसक एवं अलगाववादी हो गया। 1990 में भारत सरकार द्वारा प्रतिबंधित किये जाने के बावजूद इसकी हिंसक गतिविधियाँ जारी हैं। बैंक डकैती, अवैध वसूली, व्यापारियों एवं राजनीतिज्ञों की हत्या आदि इसकी प्रमुख गतिविधियाँ हैं। 2001 के बाद गैर-असमी भाषी लोगों के विरुद्ध विशेषकर बिहारियों के विरुद्ध इसकी प्रतिक्रिया दिखी है। (h(o3 - तथासंभव S. में इनकी भागीदारी इसके कार्यों के विरुद्ध प्रतिक्रिया में अधिक अन्य क्षेत्रों में भी हिंसा उत्पन्न हो सकती है।) ∴ आंतरिक S. की दृष्टि से इसकी गति० अधिक खतरनाक है।

(3) NDFB (National Democratic Front of Bodoland) ई—

यह अवैध प्रवास के कारण बोडो बाहुल्य क्षेत्रों की जनांकिकीय परिस्थिति बदलने की प्रतिक्रिया में उत्पन्न। ~~वर्तमान में~~ Feb, 93 में भारत सर० के साथ Agree होने के बाद इसका स्वरूप परिवर्तित हुआ। अब यह भारतीय संवि० के दायरे में बोडो बहुमत वाले क्षेत्रों हेतु प्रथक ... की ... है।

-) ब्लैक विडो :- जून, 2004 में [illegible] नुनिसा के द्वारा स्थापित (किया गया) यह दिमासा T. की पहचान सुनिश्चित करने हेतु एक पृथक् S. की माँग करता है।
इसकी प्रमुख गतिविधि रेलवे व उसके कर्मचारियों पर आक्रमण करना है। ∴ इस क्षेत्र में रेलवे परिचालन व विस्तार का कार्य दुष्प्रभावित हो रहा है।

त्रिपुरा :→ कारण :- 19 अनुसूचित T. उपस्थित हैं, जिनमें - त्रिपुरा, रियांग प्रमुख
↓
अन्य tribes में असंतोष

2) भू-सामरिक स्थिति :- ✓ N.E.S. में दूरस्थ राज्य
✓ अंतर्राष्ट्रीय सीमा
✓ अलगाववादी समूहों को कई देशों से समर्थन

3) चकमा शरणार्थियों की समस्या
↳ इससे यहाँ की ST संस्कृति पर प्रभाव
⇓
Cultural Identity को बनाये रखने हेतु संघर्ष

4) विभाजन के बाद बड़ी सं० में बाहरी लोगों का प्रवेश।
जिसका दुष्प्रभाव → Demographic परिस्थिति का बदलना
⇓
resources पर अधिक दबाव
ज्यादा सक्रिय

5) सरकार द्वारा तुष्टीकरण की नीति एवं दृढ़ इच्छा शक्ति का अभाव :→
- बाहरी लोगों के संदर्भ में
- चकमा शरणा० " " "

जबकि है, कि बांग्ला० के मजबूती के बाद
बांग्ला० के बाद भी 1971 के

(इस संबंध में ये आते तौर इन्हें का प्रयास किया जाये
समर्पित सबूत
है) → but समस्या strong policy अपना?
पर ये चीन के साथ ∴ वास्तव: गुप्ती

त्रिपुरा में ~~अस्थ~~ असंतोष का कारण बना। |

→ Counter balance का प्रयास त्रिपुरा में

(संगठन) :- NLFT (National liberation Front of Tripura)

गठन → किया; 1989 में

aim :- प्रमुख → ~~अवैध घुसपैठियों को~~

भारत से पृथक राज्य के हेतु (राष्ट्र) की स्थापना

1997 में activity बढ़ते जाने के कारण केंद्र सरकार

द्वारा UAPA के तहत प्रतिबंधित किया जाना

(MISA (Maintanance of I S A)

⇓

1980 में इसे Convert ⇒ रासुका (राष्ट्रीय सुरक्षा) कानून

इसी के तहत UAPA लाया गया)

→ बाद में इसे 2002 में पोटा के तहत आतंकी संगठन

घोषित किया गया।

:- ATTF (All Tripura Tiger force) :-

स्थापना → 1990 में

aim → संप्रभु क्षेत्र की माँग ना करके → बांग्लादेशियों

के विरुद्ध आक्रामक अभियान चलाना एवं निष्कासित करना

⇓

ताकि संस्कृति संबंधी ~~खतरा~~ खतरा

→ बाद में ATTF के सरकार की बात → समस्या

समाधान

मणिपुर :- मूल समस्या :- 1) यहाँ की तीन T (कुकी, नागा, मैतेई) — they think कि कोई हल नहीं

मैतेई का निवास घाटी में — पर्वतीय क्षेत्रों में निवास — S.T. घोषित नहीं

bcoz मैतेई 17वीं - 18वीं सदी से वैष्णव धर्म स्वीकार — General मानना

ये हिन्दू जाति व्यवस्था में शामिल हैं।

↓

the reli को ignore → Hinduism → ∴ St का दर्जा नहीं) के बीच आपसी असंतोष

↓ I.S.

2) तेल एवं प्राकृतिक गैस की प्रचुरता परंतु इसका दोहन ना हो पाना। ⇒ स्थानीय स्तर पर सारोप की विकास नहीं

↓

असंतोष

3) 1966-67 के आस-पास का अकाल → that time they were part of NEFA

↓

but सरकार ने तत्काल रणनीति नहीं अपनायी

↓

(सोचा कि if स्वायत्त सत्ता / राज्य) ← अलगाव की भावना, → विकास

संगठन :-

PLA (People's liberation Army) :-

- इसकी स्थापना sept, 1978 में
- आरंभ की स्थापना में चीन की भूमिका रही
(चीन का aim :- क्रांति का प्रसार)

↓

∴ CPC indirectly ऐसे अलगाववादी गुटों को समर्थन ...

प्रश्न 8 -> सेतु 80 की स्थापना

कारण :- 1949 में मणिपुर का विलय शासक के हस्ताक्षर द्वारा जबकि वह जन प्रतिनिधि नहीं था

- इनका कहना कि उस हेतु जनमत संग्रह की बात

But => यहाँ के लिए ऐसा न्यात.

भारत सरकार की Po होली

- कार्य प्रणाली :- नृजातिय एवं भाषायी I० को स्वीकृत कर जनसमर्थन प्राप्त करना।

- राज्य की culture I को स्वीकृत, तो डिमाण्ड को हिंसात्मक तरीकों से उठाना → भारत सरकार पर दबाव। but मांग चलन र aim को with mean

ऐसे समझौता → मणि० के लोकतंत्र

=> but NSCN (IM) समझौता के बाद Reob ↑)

लगातार वार्ता के बाद 1990 के दशक में यहाँ की स्थिति सामान्य हुई, तथा 1995 में रिशांग किसींग के नेतृत्व में लोकतांत्रिक सरकार के गठन के साथ Insurgency समाप्त हो गयी है। 1998 के बाद दो समस्यायें दिखती हैं :- 1) कुछ लोगों का सत्ता में लगातार बने रहना ~~जिससे विदेशी प्रवृत्त~~।

2) जून, 2001 में NSCN (IM) के साथ संघर्ष विराम समझौता without territorial limit का प्रावधान स्वीकार किया जाना। ✓ जबकि मणि० इसके लिए तैयार नहीं इसके प्रतिक्रिया में पुनः संघर्ष शुरू हो गया।

3) 2004 के बाद यहाँ शांति स्थापित है, लेकिन MHA (गृह मंत्रालय ...

मुद्दों का अभाव है। ∴ भविष्य में यहाँ अलगाववादी विचारों को बल मिल सकता है।

मिजोरम ∴ (1) यहाँ बांग्ला० व म्यानमार की सीमा मिलने के कारण non-s. actors की भूमिका अधिक रही है।
(जहाँ सरकार की कोई एजेंसी direct involv..
⇓
बल्कि ऐसे संग० निर्मित जो राष्ट्रीय हित की पूर्ति कर सके।)

(2) मादक पदार्थ की समस्या ∴

Org.— (i) MNF ((मिजो National Front) ∴
भारतीय संवि० के दायरे में एक पृथक राज्य की माँग करना, लेकिन NSCN के साथ संपर्क के कारण वह अलगाववादी समूह बन गया
⇓
आगे एक अलग माँग
⇓
राजीव गाँधी सरकार से समझौता
(1987 में)
फरवरी, 1987 में पृथक राज्य की स्थापना के साथ यहाँ असंतोष समाप्त हो गया।

समस्या समाधान हेतु प्रयास for N.E.S.

Preventive (अल्पकालिक) — Developmental (दीर्घकालिक)

Preventive ∴
→ AFSPA, पारित करना एवं इसका क्रमशः सभी N.E.S. पर विस्तार। किसी S. के ← प्रभाव
⇓
N.E.S. में यह सभी राज्यों सम्पूर्ण भू-भाग को व पूरे क्षेत्र में अशांत क्षेत्र घोषित करना विस्तारित है
अशांत क्षेत्र / Local पुलिस के पास शक्ति कमजोर
ग्राम का बड़ा हिस्सा → क्षेत्र → no audit
F.O. → आम लोग प्रभावित
→ विकास कार्य
→ मुठभेड़ हत्या
→ यहाँ AFSPA का भारी विरोध है

जरूरत है, रक्षे regiment जैसे
→ local police f. को जोड़ा
→ बेहतर coordination

(2) सुरक्षा बलों एवं केन्द्रीय पैरा मिलिट्री बलों की पर्याप्त संख्या में तैनाती
पहले BSF के जगह NSES का लाया गया → now
ITBP → bcoz → वहां की locals से परिचित

now ↓ BSF in NW. area (Generally)

(3) विभिन्न Insurgent group के साथ गहन वार्ता चलाया जाना।

(4) बांग्ला० एवं म्यानमार के साथ संबंध सुधारने की कोशिश है
⇓
but support ↓

विकासात्मक कार्य है →
refer from notes
→ विजन - 2020 → main aim → त्रिस्तरीय कार्य
→ सुरक्षा of local people
→ सहयोग
→ सुशासन
कौशल विकास को प्रोत्साहन

regional issue को ध्यान में रख नीति
IISS → nodal agency है सीमावर्ती क्षेत्रों की परिस्थितियों का अध्ययन करे ⇒ सुधार कैसे हो
⇓
P. C. में विभिन्न क्षेत्रों की दशा के आधार पर प्रयास
→ Digital मानचित्रण

I.S. पर चुनौती उत्पन्न करने वाले external State & Non-S.A.

State A.

S → popo + area + Govt. + संप्रभुता

- जन संप्रभुता ⇒ सं० क्षेत्र के निवास करने वाली जनता मे है। ⇒ Ex ⇒ Democracy ⇒ इसमें स्वयं राज्य मशीनरी के संचालन की संस्थाएं व एजेंसी
- कुलिन तंत्र ⇒ मोनार्की में ⇒ लोगों की भागीदारी नीति निर्धारण मे नही

NSA

- NSA के पास I^st 3 शर्ते हो सकती हैं।
- bcoz समानान्तर सरकार ⇒ NS.CN (IM) गुट की सरकार
- लोगो का विश्वास हो सकता है → (जन अदालत)
- प्रभाव बाहरी आतंकी गुट के संबंध ⇒ लोगो से संपर्क के कारण ⇒ यहाँ के बाहर के तत्व संबंध प्रभाव।

NSA ⇒ S- संप्रभुता

अन्य सरकारों से मान्यता नही ⇒ औपचारिक रूप के राजतंत्र के भाग नही but राज्य तंत्र की मशीनरी के साथ प्रायः इनका घनिष्ठ संबंध होता है। (Ex ⇒ लश्कर + ISI)

- सरकार की मौन सहमति हो सकती है। SA
- बांग्ला ⇒ BNP + हिफाजत - ए - इस्लाम (जमात - ए - इस्लाम) (NSA)

- दोनों मे अंतर अत्यंत सीमित है bcoz प्रायः NSA को

उपयोग हेतु S. को D - Ind. Support
• ये भी विदेशी संबंध बनाते हैं।

(SA)

सकारात्मक भूमिका
→ आ० विकास में सहयोग
→ उत्पादन इकाइयों की स्थापना।
→ पूँजी निवेश
→ व्यापारिक संपर्क

(NSA)

नकारात्मक भूमिका
→ विभिन्न अलगाववादियों व आतंकी समूहों, अपराधिक संगठनों को अपने यहाँ संरक्षण देता है।
→ जरूरत पड़ने पर अस्त्र शस्त्र की S
→ वैचारिक समर्थन
→ दूसरे देश I. S. पर खतरा उत्पन्न

(NSA)

(+)ve
- सुख, शांति, सुव्यवस्था विकास etc में सहयोग
Ex → UNO → NSA
UNESCO, World Bank
NGO लगा है।
(बिल गेट्स फाउंडेशन)

(−)ve
समृद्धि में बाधा उत्पन्न
उदा० आतंकवाद, संगठित अपराध
→ मादक पदार्थों के तस्कर
→ अलगाव को Support

- NSA का पिछले 1½ दशक से नए रूप में दिखता है।
- दूसरे देश में असंतोष को उभारना।

मीडिया, विदेशी मीडिया की आलोचना को आधार बनाता है

सोशल मीडिया लोगों को भड़काना

भारत के लिए क्यों खतरनाक —> (i) भारत में अनेक अलगाववादी व उग्रपंथी समूहों की उपस्थिति।

(ii) भारत की भूमि सीमा (Border Area) का विस्तृत होना — Ex:- नेपाल, बांग्ला०, म्यानमार, कुछ सीमा तक Pak.

⇓

सरकार की नीति ट्रैक 2, ट्रैक-3 पर पहुँची

परिणाम :-> - चीन एवं पाक के संदर्भ में SA, जबकि बांग्ला० एवं म्यानमार के संदर्भ में NSA की भूमिका।

चीन के कारण :- 1) I-C के बीच लम्बे समय से सीमा विवाद रहा है, जो कि अभी भी है।

2) CCP(M) (चाइनीज कम्यु० पार्टी) के द्वारा क्रांतिकारी भावना के प्रसार की कोशिश करना। जहाँ भी Peasant uprising

⇓

वहाँ हर तरह के Suppor

3) दक्षिण एशिया में भारतीय प्रतिस्पर्धा को समाप्त करके अपनी सामरिक स्थिति मजबूत बनाना।

⇓

चीन अपने समांतर किसी S. A. राज्य को उभरने नहीं देता।

(b) प्रभाव :-> तीन स्तर पर :->

1) भारत के माओवादी Mov. को वैचारिक व रणनीतिक सहयोग प्रदान करना। इसके लिए चयनात्मक P. का अनुसरण। ताकि अपने रा० हित की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

श्रीलंका के वामपंथी M. को समर्थन नहीं, जबकि भारत के वामपंथी उग्रवाद को समर्थन } —> bcoz लंका से बेहतर संबंध

Selective Policy

श्रीलंका कोलम्बो प्रस्ताव ⇓ I ने स्वीकारा नहीं

2) N.E.S. के संदर्भ में चीन की भूमिका रही है, यहाँ के अलगाववादी समूहों को प्रशिक्षण, हथियार S. एवं economic सहयोग।

हस्तक्षेप ⇓ भारत के विरोध हेतु को support

⇓

भारत ने किया नहीं but इसमें चीन की Indirect भूमिका रही

1991's → relation सुधरे (I-C) → समर्थन ↓ → अलगाववादी समूह भारत से वार्ता हेतु तैयार

पिछले 20 वर्षों से I-C संबंधों में सुधार के कारण N.E. के अलगाववादी गुटों को चीन का Ind. समर्थन कम हुआ है। लेकिन पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ है। ∴ इन अलगाव० समूहों तथा भारत सर० के बीच संघर्ष विराम पर समझौते हुए। माओवादी M. के संदर्भ में चीन का प्रभाव अब लगभग नगण्य माना जा रहा है। संभवतः ∴ CPI (ML) द्वारा CCP (m) की आलोचना की जा रही है।

3) साइबर चुनौती के संदर्भ में :
- → (SA) → if direct govt. agency Involve.
- → (NSA) → if it done by non-gov...

चीन सक्रिय against India

पाकिस्तान की भूमिका

→ both role
- → SA
- → NSA

J&K की कश्मीर में भूमिका :
प्रारंभ में → NSA की भूमिका

जनजातीय कबीलों को समर्थन - हथियार की आपूर्ति

⇓

विलय (Oct, 1947) में

J&K के विलय के साथ SA के रूप में भूमिका | bcoz

⇓

-1971 के बाद Pak रणनीति में परिवर्तन ⇒ Proxy war के रूप में (NSA का use)

⇓

- NSA की भूमिका का व्यापक विस्तार किया गया

⇓

निजी संगठनों की स्थापना, प्रशिक्षण, सहायता, सरकारी प्रोत्साहन तथा बिना अवरोध के कार्य करने की छूट दिया जाना। ⇒ (सर० की सहायता से प्रशिक्षण)

⇓

NSA के अंतर्गत लश्कर-ए-तोयबा, जैश-ए-मोहम्मद, बलूच लड़ाकू समूहों का गठन by पाकिस्तान सर०

9891145899 - (सुबह 9:30)

NSA के अंतर्गत आतंकी समूहों + आपराधिक संगठन के बीच निकट का संबंध स्थापित
⇓
NSA की भूमिका प्रबल

लाभ → (1) आवश्यकता पड़ने पर इनके संदर्भ में अस्वीकारता संभव हो सकता है।
(2) NSA का उपयोग अपेक्षाकृत सस्ता होना ⇒ (bcoz प्रत्यक्ष w. में ज्यादा खर्च)
⇓
Low intensity conflict
(3) अन्य देशों के आतंकी एवं आपराधिक समूहों से संबंध संभव हो सकता है। ⇒ ऐसे में NSA के वित्त पोषण का वैकल्पिक तरीका भी विकसित हो सकता है।
(4) NSA में धा० उन्मादी व्यक्तियों की बहुलता होती है।
⇓
इस कारण आत्मघाती हमलों का विकास संभव हो सका है।
(5) अंतर्राष्ट्रीय दबाव की स्थिति में NSA में आंशिक परिवर्तन या संशोधन भी संभव हो सकता है।
उदा :- लश्कर - ए - तैयबा ⇒ जमात - उल - दावा
when वहाँ आतंकी समूह → ∴ नाम परिवर्तित
को प्रतिबंधित

प्रभाव :- J&K के अतिरिक्त भारत के अन्य क्षेत्रों में
✓ पंजाब में
✓ NSA के माध्यम से आतंकी विस्फोट को अंजाम देने का प्रयास :-
... (weapon of Mass Destruction)

में पहुँच NSA तक होने पर भारत के समक्ष गंभीर चुनौती उत्पन्न हो सकती है।

(नागरिकता, अस्त्र, आतंक, शासन अस्त्र)

भारत की रणनीति के विकल्प →

I) NWO के चार्टर A-51 → यह किसी भी देश को आत्मरक्षा हेतु आक्रमण की अनुमति देना। इसी आधार पर

→ भारत ⇒ eg. अमेरिका द्वारा बलूच क्षेत्रों में → ड्रोन आक्रमण

को भी NSF ठप पर सीमित आक्रमण नीति ⇒ भारत के लिए सीमित विकल्प है → तीन कारण

(1) भारत की तकनीकी दक्षता कम है।

(2) भारत एवं पाक० के बीच तनावपूर्ण संबंध। दोनों के बीच वास्तविक w. शुरू होने का खतरा

(3) भारत का किसी "सामूहिक सुरक्षा संधि" का सदस्य ना होना (NATO)

II) कूटनीतिक दबाव बनाने की कोशिश → पाक० को अपनी रणनीति बदलने हेतु विवश होना पड़ा। भारत को सीमित सफलता मिली

III) पाकिस्तान के साथ प्रत्यक्ष वार्ता एवं संबंध सुधारने का प्रयास करना। पाक० में एक सशक्त सरकार के गठन में भूमिका → आर्थिक पक्ष पर अधिक बल देना → जनमत का दबाव

बाँग्लादेश → NSA के संदर्भ में भूमिका

कारण :- 1) स्वयं बाँग्ला॰ में भी कट्टरपंथी समूहों की उपस्थिति तथा भारत के अलगाववादियों को उनका समर्थन मिलना।
2) ISI के द्वारा बाँग्ला॰ की भूमि का उपयोग भारत विरोधी गतिविधियों के लिए किया जाना या करना।
3) इण्टरनेशनल क्राइम सिंडिकेट की भूमिका यहाँ प्रभावी होना।
⇓
भारत के अलगाववादियों को भी आर्थिक सहायता देता है।
(NSCN (K) तथा मिजो नेशनल फ्रण्ट
मणिपुर की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी)
⇓
→ द्वारा समानान्तर सरकारों की स्थापना। ↗ भारत द्वारा
⇓
जो कि जन असंतोष का गठन करती है → bcoz

समाधान के प्रयास :- ⇓ बाँग्लादेश के सुरक्षा बलों व कट्टरपंथी समूहों के बीच संघर्ष → भारत के लिए अच्छा संकेत

// आवामी लीग का समर्थन

// दोनों C. के बीच सीमा पर चौकसी बढ़ाने की कोशिश।

समस्या :- 1) बाँग्लादेश की भौगोलिक स्थिति के कारण सीमा पर प्रभावी निगरानी संभव नहीं हो पा रही है, विशेषकर पर्वतीय क्षेत्र व नदियों की उपस्थिति के कारण।
2) बाँग्ला॰ में कट्टरपंथियों को पूर्ण रूप से दमन भी नहीं हो पा रहा है। ∴ उनके द्वारा भारत विरोधी गतिविधियों के संचालन की समस्या बनी रह सकती है।

म्यानमार

इसकी भूमिका भी NSA के संदर्भ में रही है।
:- म्यानमार के क्षेत्रों में N.E. के अलगाववादी समूहों द्वारा अपने ...

... (UC), PLA, UNLF आदि दलों के द्वारा | म्यानमार के अराकान क्षेत्र का इस्तेमाल किया जाना |
(सागाँग)

- 2011 में भा - म्या० के बीच सामरिक संबंध विकसित होने के कारण इस मामले में कमी आयी है | इस संबंध के अंतर्गत दोनों C- के द्वारा NSAके समूह के विरोध कार्यवाही शुरू की गई है | जिसमें कुछ सफलता भी मिली है |

-- म्या० में लोकतांत्रिक प्रक्रिया शुरू होने के कारण भी NSA को सहयोग मिलना कम हुआ, But अभी भी दो समस्याएँ गंभीर

1) म्यानमार के कुछ जनजातियों द्वारा अलगाववादी M० चलाया जाना जैसे शान, करेन, केचिन आदि | तथा इनके साथ भारत के अलगाव० समूहों का सहयोग भी है |

2) म्याँ के पर्वतीय क्षेत्रों में वहाँ की सेना का व्यापक नियंत्रण नहीं होना | इससे वहाँ NSA के वहाँ पुनः पनपने या शरण लेने की संभावना उत्पन्न हो सकती है |

इसके अतिरिक्त इण्टरनेशनल ड्रग्स सिण्डिकेट का प्रभाव होने, तथा ISI द्वारा प्रभाव क्षेत्र के विस्तार की कोशिश किये जाने के कारण अभी भी समस्या सीमित स्तर पर बनी हुई है |

स्रोत + स्वाद के चैनल को गोपनीय रखना

मनी लॉण्ड्रिंग (Money Laundering)

- इस्तेमाल ऐसा धन, जो अवैध स्रोत से आया हो को सफेद धन में बदलने की प्रक्रिया

Ques Money laundering क्या है
- प्रारंभ होने के कारण
- दुष्प्रभाव
- रोकने के उपाय

अर्थ :- अवैध स्रोत से प्राप्त धन को वैध बनाने तथा उसके उपयोग को कानूनी दृष्टि से उचित बनाने की प्रक्रिया को धन का शोधन या M L कहलाती है।

(why) → bcoz आतंकवादी समूह ने एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में
- धन भेजा
- संगठित अप० व आतं० के बीच गहरा संबंध

कारण हैं 1) अपराधिक संगठनों के द्वारा आपराधिक गति० के संचालन हेतु विभिन्न क्षेत्रों में धन भेजने की समस्या उत्पन्न होना।

2) आतंकी संगठनों को विभिन्न क्षेत्रों में आतंकी उद्देश्यों से धन के प्रवाह को बनाए रखने की आवश्यकता।

3) बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के कारण अवैध धन का भंडारण बढ़ना।

4) अपहरण, अवैध वसूली आदि से प्राप्त धन को खपाने की समस्या।

5) मादक पदार्थों, मनुष्यों एवं गैर-कानूनी हथियारों की तस्करी एवं व्यापार से प्राप्त धन के उपयोग को सुनिश्चित करना।

6) कर-वंचना एवं अन्य आपराधिक गति० से प्राप्त धन को सार्वजनिक जीवन में लाने की समस्या

(व्याख्या) :- अवैध धन को वैध: बैंकिंग संस्थानों, बीमा Co, म्युचुअल फण्ड या शेयर दलालों के माध्यम से वैध रूप प्रदान करने की कोशिश होती है।

(प्रभाव) :-

(1) अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना।
(उदा: ब्याज दर, मुद्रा विनि० दर एवं मुद्रा स्फीति का बढ़ना)

(2) भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलना, क्योंकि भ्रष्ट आचरण से प्राप्त धन के वैध हो जाने की संभावना बनी रहती है।

(3) विदेशी निवेश के संदर्भ में राउण्ड ट्रिपिंग की संभावना बढ़ना अर्थात् काला धन को विदेशों में शोधन करके वापस निवेश हेतु लाना।

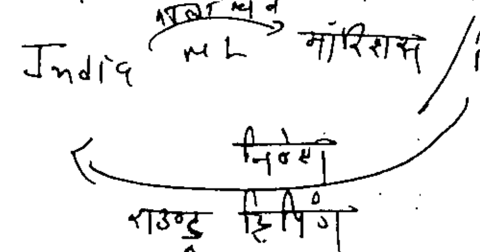

(4) हवाला को प्रोत्साहन मिलना :- किसी भी एक देश से दूसरे देश में अवैध हस्तांतरण (bill of exchange के माध्यम से)

(5) अवैध स्रोतों से प्राप्त धन के वैध होने पर उपभोगवाद की संस्कृति को व्यापक समर्थन मिलना।

(रोकने के उपाय) :-

1.) UNSC द्वारा M.L. के विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकृत किया जाना ⇒ इसके आधार पर M.L. के विरुद्ध प्रभावी कानूनों का निर्माण किया जाना।

(2) भारत में प्रिवेंशन of M.L. कानून, 2005 से लागू है। इसके अंतर्गत बैंक, बीमा Co तथा शेयर दलालों के संदर्भ में जिम्मेदारी निर्धारित की गयी है :-

1) अपने ग्राहक के पहचान की पूरी जाँच करना KYC मापदण्ड

(a) प्रत्येक तीन वर्ष के बाद KYC नॉर्म्स को और अनिवार्य रूप से लागू कराने का प्रावधान किया गया है। (कार्य by RBI, etc)

जिम्मेदारी

a) नियमों के उल्लंघन की स्थिति में संबंधित एजेंसियों द्वारा कार्य किये जाने का प्रावधान जैसे बैंक के संदर्भ में → RBI
शेयरों के " " → SEBI
बीमा Co " " → IRDA

b) वित्तीय कार्यकलापों का पूरा रिकॉर्ड रखना। तथा संबंधित एजेंसियों को उपलब्ध कराना

c) सरकार को नियमित जानकारी उपलब्ध कराना व संदिग्ध मामलों की जानकारी FIU - IND (Financial Intelligence Unit of India) को उपलब्ध कराना।

d) KYC नॉर्म्स का विस्तार P-प्रशासनिक रूप से imp व्यक्तियों के संदर्भ में भी करना।

II) FATF का गठन करना :- प्रारंभ में इसमें केवल विकसित देश शामिल थे, लेकिन वर्तमान में इसमें प्रमुख विकासशील देश भी शामिल हैं। (भारत सहित 34 C.)

+ दो सहयोगी पार्टनर

E.U. (27) Gulf Cooperation Council (GCC)

तथ्य। कार्यों। सदस्य देशों की जाएगा।

NIA
NCTC

मीडिया एवं सोशल मीडिया की भूमिका

प्रिन्ट मीडिया → (समाचार पत्र)
इलेक्ट्रोनिक मी०

Imp. :- लोकतंत्र का चौथा स्तंभ bcoz → सरकारी नीतियों का विश्लेषण
⇓
जिससे जनता तक जानकारी
⇓
जनता के प्रति सरकारी की जवाबदेही सुनिश्चित करना

प्रावधान :- सांविधानिक प्राव :- मीडिया की स्वतंत्रता के संबंध में
- A 19(1) में अंतर्निहित
↳ वाक् स्वतंत्रता का विस्तार
↳ अप्रत्यक्ष रूप से मीडिया को कवर

→ मीडिया एवं जर्नलिस्ट की imp भूमिका का निर्वहन संभव

कैसे राष्ट्र निर्माण में भूमिका :-

↳ 1) स्वस्थ कार्य प्रणाली ⇒ शासन प्रणाली पर व्यापक प्रभाव
⇓
bcoz 1) रा० महत्व के मुद्दों को चिन्हित
↳ सर० की जवाबदेही को चिन्हित

2) विशिष्ट रा० मुद्दे पर (जनता को शिक्षित करना
⇓
जनमत का निर्माण

3) यह प्राय: सर० एवं जनता के बीच जानकारी के आदान-प्रदान का माध्यम होती है।

सर ← जनता
↳ Bill के प्रकाशित

(4) किसी विशिष्ट मुद्दे पर सरकार का ध्यान आकर्षित करके शीघ्र निर्णय की संभावना उत्पन्न करना।

(5) अनेक अवसरों पर सरकार पर अनौपचारिक दबाव बनाकर उसे अपना निर्णय बदलने हेतु विवश करना। (KaGa बालाकृष्णन Case)

को आलोचना। → संकुचित / स्वार्थी छवि की अभिव्यक्ति होना ⇒ ... मुद्दे पर भारत के माध्यम

अधिकार, जनमत का निर्माण

2) जटिल समस्याओं का अति सरलीकरण करना ⇒ इससे निष्पक्षता की समस्या प्रभावित (इथार case ⇒ तीन आतंकवादियों का छोड़ा)

3) नकारात्मक पक्षों पर आवश्यकता से अधिक बल देना ⇒ उससे विरोधी शक्तियों को रणनीति बनाने का अवसर मिलना।

4) अति संवेदनशील मुद्दों पर आत्मसंयम का अभाव दिखना। इसके माध्यम से दुष्प्रचार व विरोधी नीति का अवसर मिलना (Ex ⇒ मुम्बई attack)

5) इसके अतिरिक्त जातिय, क्षेत्रिय, साम्प्रदायिक मुद्दों पर भी भविष्य में नकारात्मक छवि मीडिया द्वारा निर्मित करने की संभावना व्यक्त की गयी है। ∴ मीडिया पर सेंसरशिप की आवश्यकता नहीं है, but आत्मसंयम, आत्मनियंत्रण व कोड ऑफ कन्डेक्ट की आवश्यकता है। ताकि संवेदनशील मुद्दों पर संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने से बचा जा सके।

सोशल मीडिया

इन्टरनेट अनुप्रयोग आधारित मीडिया / (यानि मी० का वह रूप जहाँ विचारों, आँकड़ों, दृष्टिकोण को सार्व० करने हेतु इन्टरनेट की भूमिका) इससे विचारों, दृष्टि०, विडियो, आँकड़े आदि का आदान-प्रदान संभव हो सकता है। उदा ⇒ फेसबुक, ट्विटर, चैटिंग, ब्लाग etc

⇓

इसमें कम्प्यूटर के अतिरिक्त साधारण मोबाइल और स्मार्टफोन के द्वारा भी प्रयोग संभव होने के कारण दायरा अधिक व्यापक होना।

सकारात्मक भूमिका ⇒ 1) सबसे प्रबल प्रभाव राष्ट्रीय एवं सार्वजनिक imp. के मुद्दों पर राष्ट्रीय जनमत का निर्माण Ex ⇒ अन्ना आंदोलन

नकारात्मक भूमिका ⇒ अनेक बार हिंसक गति० का माध्यम (Ex ⇒ असम घटना, मुम्बई में हिंसक घटना ...)

NE० के लोगों का अन्य राज्यों से पलायन की स्थिति निर्मित।

राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता तथा आंतरिक सुरक्षा पर चुनौती उत्पन्न करना)।

- सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों के असंतोष को अधिक हवा देने में

- IDSA (Inst. of Defence ~~Studies~~ Strategic Analysis) की रिपोर्ट → (कई ऐसी शब्दावलियाँ प्रयुक्त, जो I. S. की समस्या उत्पन्न कर सकती हैं)

क्षेत्रीय विवादों, साम्प्रदायिक मु०, जातीय प्रश्नों व विशिष्ट S. मुद्दों से संबंधित अनेक शब्दावलियाँ सो० मी० में प्रयुक्त हो रही हैं। ∴ भविष्य में रा. एव अंत०सु हेतु गंभीर चुनौति उत्पन्न हो सकती है (why प्रासंगिक)

दुरुपयोग को रोकने हेतु सरकारी प्रयास ∴ (- प्रोफाइल स्थायी नहीं ⇓ समय के साथ update ⇓ इसको सो. के समय के अनुरूप प्रयास ⇒

{ उपाय
↳ ऐसे लिंक / सामग्री का easily available virtual space
प्रतिबंधित

- संबंधित लिंक एवं वेबसाइट को सरकार द्वारा स्वयं प्रतिबंधित किया जाना अथवा ISPs (Internet सर्विस प्रोवाइडर) को प्रतिबंधित करने का निर्देश देना। ⇒ but इसका प्रभाव सीमित bcoz ~~क्योंकि~~ ~~ब्लॉक करना कंटेन्ट easily~~ ~~स्थानांतरित~~ ① IP address को ब्लॉक करने के बावजूद इसका IP address बनाना संभव होता है। ② प्रतिबंधित IP address की सामग्री को दूसरे IP address पर स्थानांतरित करना संभव

(सुझाव) ∴ सोशल मीडिया के संदर्भ में अमेरिका, रूस व चीन की तरह मॉनिटरिंग टूल प्रणाली का उपयोग भारत में भी किया जाना चाहिए → (अनेक जगहों पर ऑटोमेटिक सेन्टर ⇒ S.M. की गति० को ट्रॅक ⇒ यदि कोई सामग्री रा०हित के प्रतिकूल → तो उसे चिन्हित → रिलीफ फिल्टर

भारत सर० द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग प्राकृतिक विपदाओं, महामारी etc. के संदर्भ में जागरूकता बढ़ाने हेतु हो रहा है। ∴ उसी मॉनिटरिंग टूल प्रणाली अपनाते हुए S.M. का उपयोग राष्ट्र हित में करने की जरूरत है।

साइबर चुनौती एवं सुरक्षा → (GDP का 6.5%)

→ मूल आधार - संचार नेटवर्क

(भौतिक)
वर्तमान में इसे Critical National Infra का भाग स्वीकार
(वह स्थिति जहाँ विकास की ऐसी दर प्राप्त → उसके बाद no गिरावट ⇒ विकास या तो Constant या ↑

संचार नेटवर्क → वायस नेटवर्क → स्वीच सर्किट के विरुद्ध
↳ डेटा नेटवर्क → इन्टरनेट एवं संबंधित

इसके निर्माण में दो प्रकार भौतिक के लिए

I) तार आधारित की प्रणालियाँ → विद्युत आवेग के रूप में ⇒ Intercept आसान
↳ कॉपर तार
↳ कोएक्सियल तार } → पहले इसके लेकर leak
↳ Fibre optics → 2003 के बाद से इस पर भी

समस्या
→ संचार electric impulse के रूप में नहीं ⇒ प्रकाश तरंगों के रूप (गति तीव्र) ⇒ Intercept/चोरी, now संभव. संशोधित

II) बेतार आधारित नेटवर्क → (तरंगों पर आधारित < Microwave, radio)
चोरी आसान → bcoz areal रूप से ⇒ सेंध easily data flow

(चुनौतियाँ) :- दो प्रकार की चुनौति

A) भौतिक चुनौती अर्थात भौतिक सामग्री को क्षति होना bcoz of बम विस्फोट, आतंकी, प्राकृतिक विपदा आदि के कारण क्षति
(हार्डवेयर)
- सुरक्षा हेतु भौतिक तरीकों की आवश्यकता

B) साइबर चुनौती :- संचार माध्यम की क्षमता या सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल से संचार नेटवर्क को ध्वस्त करना।

(Types of साइबर चुनौती) :- 1) विश्वसनीयता की क्षति :-
अर्थात किसी संगठन के वेब पेज की सामग्री को संशोधित कर देना) → संशोधन by हैकर not by sender

(2) उपलब्धता की क्षति :- पूरे संचार तंत्र की कार्यप्रणाली की गति को धीमा कर, या सर्वर डाउन होना।

(3) गोपनीयता का क्षति :- किसी विशिष्ट आँकड़े की चोरी करके गोपनीय आँकड़ों का दुरुपयोग करना।

पनामा हमला → विशिष्ट पिटर पर रख Alphabate वाले के account को detect ⇒ क्षति कम → like

(4) भौतिक परिसम्पति की क्षति :- वायरस/वार्म का इस्तेमाल करके किसी संगठन/देश की संचार प्रणाली अथवा तंत्र को ध्वस्त करना जैसे - power shut down का निर्देश होना (पूरा system ही collapse)

नाभिकीय संयंत्र/अंतरिक्ष प्रणाली आदि की कार्यप्रणाली अवरुद्ध होना।

स्टक्सनेट वार्म का इस्तेमाल :-

2004 के बाद से वैश्विक स्तर पर साइबर चुनौती उत्पन्न करने SA व NSA दोनों की भूमिका देखी गयी है।

NSA :- (1) आतंकवादी संगठनों व संगठित आपराधिक समूहों द्वारा उत्पन्न किये गये खतरे विशेष रूप से उनके द्वारा वित्तिय अनियमितता की संभावना तथा अपनी गति० को अंजाम देने हेतु संचार नेटवर्क के व्यापक प्रयोग की भूमिका दिखी है।

(2) पाक० से भारत के संदर्भ में सार० चुनौतियाँ उत्पन्न की गयी हैं, विशेष रूप से संदेश पहुँचाने, नये लोगों को जोड़ने तथा भारत के विरुद्ध दुष्प्रचार करने हेतु आतंकी व आपराधिक संगठनों द्वारा संचार नेटवर्क का use किया गया है।

(3) इसके अतिरिक्त बम विस्फोट कराने अथवा आपराधिक हिंसक के लिए रिमोट कंट्रोल आधारित sim कार्ड प्रणालियों का भी उपयोग हुआ है, उदा :- बोध गया का विस्फोट

(4) असंगठित समूह अथवा किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा उत्पन्न की गयी चुनौती। यद्यपि इसका aim अपनी तकनीकी दक्षता को सिद्ध करना होता है

[illegible]

...डमा देश / सरकार के द्वारा गंभीर साइबर चुनौती उत्पन्न किया जाना, क्योंकि संसाधन एवं संगठन के स्तर पर अधिक मजबूत होते हैं। इसलिए इनसे खतरा भी अधिक व्यापक होता है। (USA, चीन)

चीन :- Mandiant Technology की रिपोर्ट के अनुसार – 2004 के बाद से India पर 35 सा० आक्रमण चीन के द्वारा हुए हैं। इसके लिए शंघाई स्थित सैन्य इकाई (PLA - People Liberation Army) को उत्तरदायी बताया गया है।

USA :- कारण :- (1) अमेरिका का तकनीकी रूप से अति विकसित C० होना।
(2) आर्थिक राज० रूप से अन्य C० को प्रभावित करने की क्षमता

तीन स्तरों पर गुप्तचर कार्य :- (1) रा० हित हेतु अन्य देशों की जासूसी करना
(ii) साइबर प्रणाली एवं अन्य संचार माध्यमों का उपयोग करना

(2) प्रिज्म कार्य० :- अंतरिक्षीय दूरसंचार प्रणालियों के signal को इंटरसेप्ट करना।
↳ विभिन्न C० के क्लाउड भण्डारण को देखने में सक्षम होना
(ऐसा सॉफ्ट० जिसमें information store)

(3) अपस्ट्रीम इन्टरसेप्शन की क्षमता विकसित होने के कारण optical fibre के आंकड़ों की चोरी आसान होना।